ॐ

सत्य शब्द संग्रह ।

प्रकाशक

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी

जिसको

सेठ केदारनाथ जी तदात्मज सेठ हनुमान प्रसाद जी मोडा ने धर्मार्थ बांटने के लिये छपवाया ।

१००० प्रति } सं० १९८३ { मूल्य प्रेम

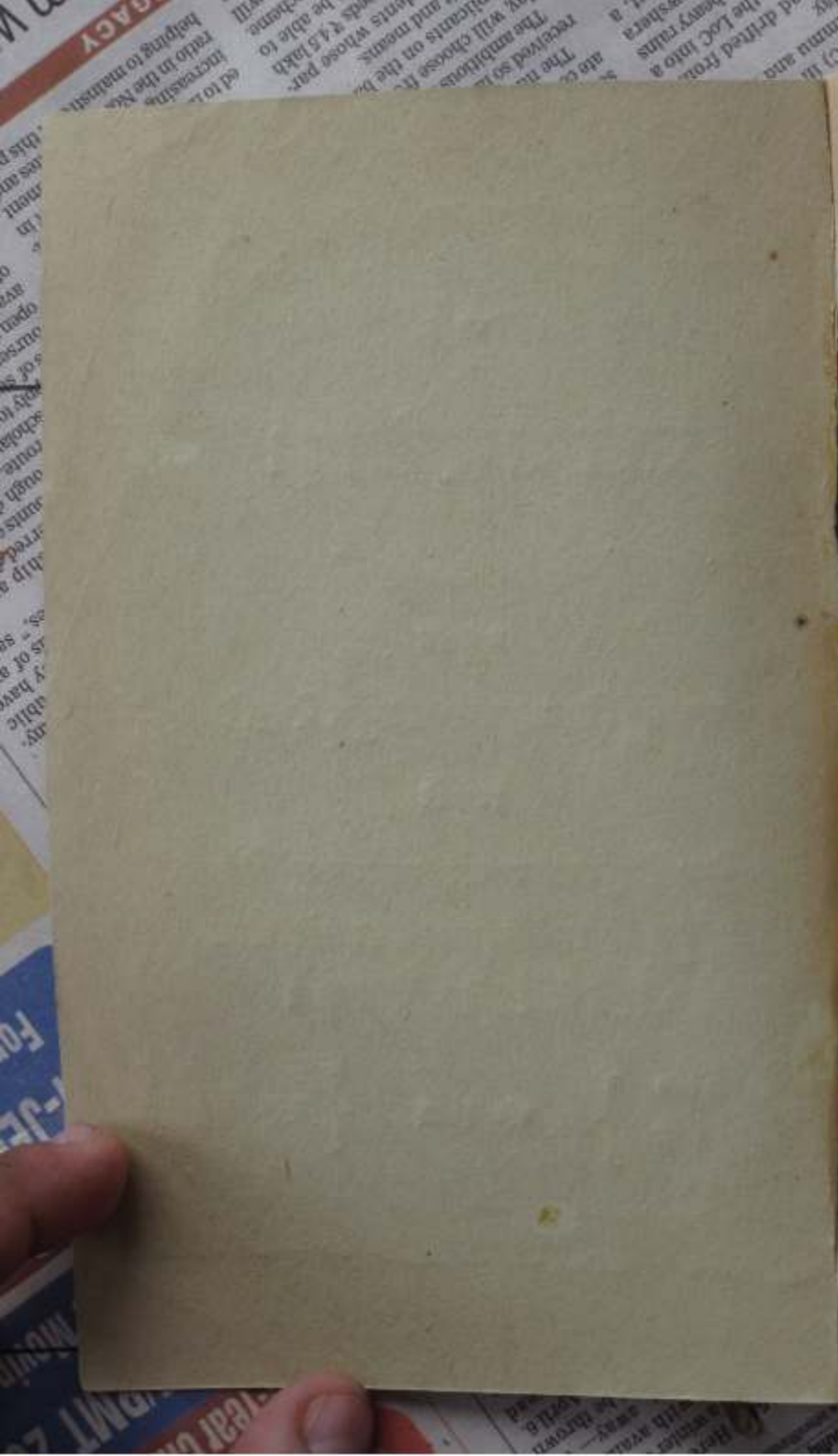

भूमिका।

प्यारे सज्जनो! मैं आपकी सेवा में एक बड़े उत्तम कल्प वृक्ष के पुष्प समर्पण करता हूं जिस की गन्ध से तुम्हारा मन रूपी भ्रमर आप से आप उड़ना छोड़ कर शान्त होकर आनन्द को प्राप्त होगा। वह पुष्प सर्व आप्त पुरुषों के शब्द हैं जिनका भगवद्भक्तों में बड़ा ही आदर है। और जिन कल्पवृक्ष महात्माओं के इस पुस्तक में शब्द हैं उनके निम्नलिखित नाम हैं:—
नरसी, नानक, नामदेव, रविदास, कबीर, सूरदास, तुलसी दास मीराबाई, चरणदास, मछन्दरनाथ, गोरखनाथ, गुलाबनाथ, भानीनाथ, सुन्दरदास, घीसादासादि। इन भजनों से आप लोगों का अन्तःकरण रूपी दर्पण जब निर्मल होवेगा तब आपको बड़ा ही आनन्द विदित होगा। इन शब्दों में भक्ति ज्ञान वैराग्य और योग भरा हुवा है। जब इन में हमलोग प्रवेश करते हैं तो अपूर्व ज्ञान और प्रेम के दर्शन होते हैं। ये शब्द बड़े ही परिश्रम से प्राप्त हुए हैं। इन के गाने वालों को जो प्रेम होता है वही जानते हैं जैसे

गूंगे के गुड़ का स्वाद गूंगा ही जानता है प्रथम प्रार्थना व उपासना के शब्द हैं तदनन्तर ज्ञान और भक्ति रूप शब्द हैं ये क्रमशः चित के मल विक्षेपआवरण को दूर करते हैं और सोऽहं ज्योति का प्रकाश करके श्रुति को गगन पर चढ़ा कर सच्चे स्वामी में लय कर देते हैं।

॥ओ३म्तत्सत्॥

॥ओ३म्॥

सद्गुरु का उपदेश

ओ३म् तत्सत परब्रह्मणे नमः।

समुद्र जब स्थिर रहता है तब उसे ब्रह्म कहते हैं और उसी समुद्र में जब लहर उठती है तब उसी को हम शक्ति या माया कहते हैं वही देश काल निमित्त स्वरूप है। पहले रूप में वह ईश्वर जीव और जगत् है दूसरे रूपमें वह ज्ञात और ज्ञेय है। सर्व शक्तिमत्तर्वसा

व्यापकता अनन्त दया उसी जगज्जननी जगदम्बा प्रेम रूपिणी भगवती के गुण हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान है। एक कणविन्दु कृष्ण, बुद्ध ईशु, आदि और जगत् का विस्तार एक विन्दु को प्रकाशित करता है। एक आत्मा ब्रह्म भिन्न २ सर्व उपाधियों में प्रकाशित होता है। बड़प्पन को डींग दलबन्दी ईर्ष्यादि सदा के लिये छोड़ दो पृथिवी की भांति सहिष्णु हो लड़कपन की चंचलता और युवा पन की गम्भीरता दोनों मिलाकर सब के साथ प्रेम से रहो। आत्मा के स्वरूप का व्यक्त और कभी अव्यक्त भाव होता है। आत्मा मानों बादलों से ढके हुए सूर्य की न्याईं है। हृदय को समुद्र के समान महान बना डालो क्षुद्र भावों को पार कर जावो अमंगल के आने पर भी, आनन्द में उन्मत हो जाओ। संसार को एक चित्र की भांति देखो जगत् में कोई तुमको विचलित न कर सकेगा। अहंता को दूर कर दृढ़तासे खड़े हो जाओ काम कांचन मान यश को छोड़ कर ईश्वर को दृढ़ता से पकड़ो। विधि निषेध के घेरे में पड़े रहने से आत्मा का प्रसार नहीं होता। जो जितनी ही आत्मानुभूति का प्रकाश कर सकता है उसके

उतने ही विधिनिषेध कम हो जाते हैं। दुसरों की सेवाशुभ कर्म है इसी के प्रभाव से चित्त शुद्ध होता है इसी के प्रभाव से सब के भीतर बैठे हुए अन्तर्यामी भगवान् प्रकाशित होते हैं। आदेश के अनुसार संगठन करने का उद्योग करना धर्म का यही लक्ष्य है यही उद्देश्य है। आदर्श धार्मिक क्षमा धृति शौच शान्ति उपासना और ध्यान में परायण आदर्श का अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है। जहां प्रेम वहीं विस्तार जहां स्वार्थता वही संकोच। अतएव प्रेम ही जीवन का एक आधार है अवश्य अहेतुक प्रेम करना चाहिये वही एक मात्र जीवन गति का नियमन करने वाला है जिस कर्म से जीवों के मन में धीरे२ ब्रह्मभाव के उदय होने में सहायता पहुंचे वही कर्म उत्तम है यदि किसी को अधिक सुभीता देना हो तो बलवान की अपेक्षा दुर्बल को अधिक सुभीता दो सदा दाता बनो अपना सर्वस्व दे डालो पर बदले में कुछ न चाहो। दूसरों से प्रेम करो सहायता करो सेवा करो तुम से जोकुछ बने दूसरों के लिये करो पर सावधान पलटे में कुछ न चाहो। व्यक्तिगत, देशगत, कालगत कर्माकर्म का साधन करो।

"परोपकाराय सतांहि जीवनम्"

श्री सच्चिदानन्देश्वराय नमः

ओ३म् श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

आलस्यं मृत्युरित्याहुर्यत्नं जीवनमित्युत

पिपीलिकाः कणशः कणशोऽश्नंसमाहृत्यश्वविवरं प्रपूरयन्ति। पुत्तिका वालमीक संचयात्क्षणमपि न विरमन्ति। सूर्यादयो महता वेगेन भ्रमन्तः क्षणमपि विश्रान्तिं न कांक्षन्ति। क्षणमपि स्तभिते समीरणे कथमिव व्याकुली भवन्ति जीवाः।

हे सच्चिदानन्द अनन्त ज्ञानस्वरूप नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव सर्व शक्तिमान सर्व हृदयान्तर्गत सर्व व्यापक प्रभु यदि मैं तुम को यहां मनुष्य शरीर में रहते हुये भी अपने आत्मा में साक्षात नहीं करपाता तो और कहां पा सकूंगा अब मेरे प्यारे परमात्मा मेरे हृदय और नेत्रों में प्रकट होकर साक्षात दर्शन दिखाओगे तो इस जीव का कल्याण होगा। ओ३म् परमात्मा यह न वह वरंच सारे पदार्थों में है सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसके जीवन का वृत्तान्त है जो सब के हृदयमें विराजमान होकर वह स्वयं लिखरहा है। सारे पदा-

र्थ परमात्मा के शब्द हैं और बोलते हैं कि आओ २ मेरी ओर आओ। जो ईश्वर ध्वनि को नहिं सुनता वह बहरा है जो मनुष्य उत्पन्न हुए पदार्थों के सौन्दर्य को नहीं देखता वह अन्धा है सौन्दर्य विवेक धर्म एक ही है तर्क से हम परमात्मा का चिन्तन करते है परन्तु सौंदर्य साक्षात दर्शन करता है। वह मनुष्य जो इन सकल पदार्थों को निरीक्षण करके धन्यवाद गायन नहीं करता वह गूंगा है। संसार की सुन्दर वस्तुयें एक विशेषसौंदर्य की सत्ताकी साक्षी हैं प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधु को दर्शाती है जोअन्य पदार्थों के सौंदर्य और उत्तमता श्रोत है। उसी को परमात्मा कहते हैं जो वस्तु ईश्वर के समीप है वह उत्तम है और जो दूर है वह निकृष्ट कहाती है। प्रत्येक पवित्रतायें उस पवित्रता के श्रोत को दर्शाती हैं। जो अच्छा है वह अपने से अत्युत्तम श्रेष्ठता के अस्तित्व का प्रमाण है उच्च स्वर से सकल पदार्थ पुकार रहे हैं कि परमात्मा सब में विद्यमान है। जब हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं। तो उसके अभ्यान्तर वास करने वाले परमात्मा के कारण से करते हैं प्यासा मनुष्य जल की अभिलाषा इसलिये करता है कि जल में परमात्मा निवास करते

हैं परमात्मा भक्तों के हृदय में प्रकट होते हैं महान् से महान् सुख अच्छे कामों के चिन्तन से होता है परमात्मा उनसे प्यार करते है जो बुरे कामों से घृणा कर श्रेष्ठ कार्यानुरत रहते हैं।

साधारण नियम

१. मनुष्य का पहला कर्तव्य यह है कि सद्गुरु की शरणमें आवे और उन की कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उन की सेवा करे।
२. उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।
३. एकही मत मार्ग का अनुसरण करे।
४. साधु सज्जन का सत्संग करे।
५. विषयों के अधीन न हो।
६. शत्रुओं का मित्र बनावे।
७. अधिक उपाधि न बढ़ावे।
८. निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।
९. भूत मात्र पर दया रक्खे।
१०. अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रक्खे।

मंगलाचरण ।

दोहा—ओ३म् निरंजनं, दुखभंजनं ररंकार ओङ्कार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥

हो गुरु धारी अलख माया जी ।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु रेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
श्री गुरु श्री गोविन्द पद मंगल हित करुं ध्यान।
मंगल श्री व्रजराज घर जो पाऊं सन्मान ॥
काहू के बल भजन की काहू के आचार।
दास भरोसे राम क सोवत पांव पसार ॥

शब्द १

ओ३म् निरंजन ररंकार प्रभु सोऽहं सत्यनाम करतार ।
अच्युत, गुरु गोविन्द दातार परमानन्द रूप निरधार।
एक अखण्ड ज्ञान, भण्डार तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं, मैं, मैं, पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ।
राम आत्मा अपरम्पार शङ्कर ब्रह्म सर्व का सार ।
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार

हरि नारायण अग्नि तार देव देव मैं करूं हूं पुकार।
कृष्णानन्ता चल हं गौड़, हुं फट स्वाहा सर्व पसार
बिनवों तुम को बारम्बार प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तद्धन गणपति नैन मझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार

शब्द २

दोहा—पुरुष प्रकृति ईश मिल अकार उकार मकार।
सर्व वेद का मूल है एक शब्द ओंकार॥
राम नाम के खेत ही होत पाप को नाश।
ज्यों चिनगारी आग की पड़े पुरानी घास॥
तुलसी अपने राम को रीझ भजो चाहे खीज।
उलटा सीधा जामिये पड़े खेत में बीज॥

हमारे प्रभु एक तुमही ओंकार। टेक॥
मात पिता गुरु बन्धु सहोदर धन विद्या परिवार। टेक
मन बल बुद्धि प्राण तुम ही हो नयनन में उजियार।
हरि होकर हरे रंग मेंदीसो पत्र पुष्प फल डार॥ह० १
धरणी आकाश शशि और तारे बिजली में चमकार।
ऊपर नीचे पर्वतसागर सब तुम अपरम्पार॥ह० २॥
तुम ही सूरज में ही गरजो बरषो अमृतधार।
एक धुनि ही तुम से सब को तुमरा वार न पार॥ह०३॥
सुंदर शक्ति विकाश शुद्धता हमको दे दातार।
काम क्रोधमद लोभ निवारो परमानंद दो प्यार॥ ह० ॥

शब्द ३

दोहा–अच्युत अगम अपार तुम तद्गुन ब्रह्म अनंत ।
परम हंस अज ईश शिव सब के आद्यन्त अन्त ॥

भजोरे मन शुद्ध सच्चिदानन्द । टेक
सकल ब्रह्माण्ड पुकारें जिनको अनन्त अपार अखण्ड ॥
पुष्प कुमार गगन में तारे वरणत सूरज चन्द ॥
सभी वस्तु की सुन्दरताएं जितलावें गोविन्द ॥
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा पूरण परमानन्द ॥

शब्द ४

दोहा- अवगुण किये तो बहु किये करत न मानी लाज ।
पतित उधारण नाम सुन बिसर गये सब काज ॥

हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो ।
समदर्शी है नाम तुम्हारो चाहो तो पार करो । टेक
इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परो
एक लोहा पूजा में राखे एक घर बधिक परो ।
ऊंच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो ।
अबकी बेर मोय नाथ उभारो नहीं प्रणजात टरो ॥
यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो ॥

शब्द ५

दोहा–भाव पात में अर्प कर सुन्दर जीवन फूल ।

ईश्वर के अर्पण कर यही ज्ञान का मूल ॥

दीनानाथ दयानिधि स्वामी कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं
श्रीगंङ्गा चरणों सेनिकसी शूचो मोर कहाँ से प्रभु लाऊं
काम धेनु कल्पवृक्ष तुम्हारे कौनसो पदार्थ भोग लगाऊं
चार वेद तुम मुख से भाषे,और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं
अनहद बाजे बजत तुम्हारे,ताल मृदङ्ग क्या शंख बजाऊं
कोटिभानुवारे नखकी शोभा,दीपक लेप्रभु कहा दिखाऊं
लक्ष्मी वारी चरणन को चेरी,कौन द्रव्य प्रभु भेट चढ़ाऊं
तुम तिरलोकी के कर्ता हर्ता,तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं
सुरश्याम प्रभु विपत विडारन,मनवांछित फलतुमही सेपाऊं

शब्द ६

दोहा—गुरु को कीजे दण्डवत कोटि कोटि प्रणाम ।
कोट न जाने भृङ्गको गुरु करले आप समान ॥

मेरे हो मनमाना है गुरु नजर निहाल दयाल । टेक
अधर अकाश अधर वाको बङ्गला घट२ आपसमाना है॥
सब से परे दूर नहीं नेड़े अद्भुत रूप लखाना है ॥
भव सागर से उतरण कारण गुरु शब्द जलयाना है ।
षड़ दर्शन में पड़ी जो खट पटी बड़ा सोई जिन जाना है।
श्रीसा सन्तशरण सतगुरु की जिन डारा मान गुमाना है।

शब्द ७

मन परदेशी हो ये नहीं अपना देश । टेक॥
सत् का कहना सत् में रहना आनन्द रूप किसीका भयना
को कोई कहे सभी को सहना येही रटन हमेश ॥ मन० ॥
गुरु की बचन सत्य कर मानो जगत जाल झूठा कर जानो
तत्व मसि वाक्य पिछानो कट जांय करम कलेश ॥मन०॥
जो दीखे सो रूप हमारा कोई नहीं है हम से न्यारा ।
मित्र और शत्रू कोई न हमारा मिट गये राग और द्वेष
शाह गुरु शुकदेव विराजे चरणदास चरणों में साजे ।
गुरु के बचन कभी नहीं त्यागे यही सत्य उपदेश ॥ मन॥

शब्द ८

दोहा - अलख इलाही एक है नाम धराये दोय ।
कहे कबीर दो नाम सुन भरम पड़ो मत कोय ॥
अलख संगमिलियोरे, तुम चलो दिवाने देश ।टेक
संत सदा उपदेश बतावें घट अंदर दीदार लखावें ।
तन मन अर्पण करियोरे ॥१॥
अनहदविहंगम बाजै तूरा कोटि भानु जहां झमके नूरा ।
बंक नाल सुध करियोरे ॥२॥
पहले पहर सुघर नर आगे चार चौक अनहद से आगे।
अब चल कबहूं न चलियोरे ॥३॥

सुषमन देश विहंगम थोरी माया गस्त फिरे चहुंफेरी।
भरम भूल मत रहियो रे ॥४॥
इस पद का कोई भेद निहारे कहै कबीर रहदास विचारे
नाम को व्यवहारी कोई मिलियो रे ॥५॥

शब्द ६

दोहा—हंसा सोहं तार कर सुरत मकरिया पोय।
अर्ध उर्ध नट क्यों फिरे सहजो सुमरण होय ॥

६ जहां का हंसा फेर ना मरेरे—हंसा चाल बसोवा देश।
टेक॥ जाहां अगम निगम दोउ धाम वास तेरा परेसेपरे।
जहां वेदों की गमनांय ज्ञान और ध्यान भी डरे ॥१॥
जहां बिन धरणी की बाट चरणों ते बिना गमन करे।
जहां बिन श्रवण सुनले नयनों के बिन दरश करे ॥२॥
तहाँ बिन देही एक देव प्राणों के बिना श्वास भरे।
जहां जगमग जगमग होय उजारो दिन रात रहे॥३॥
वहां प्रेम नगरिया के घाट अधर दरियाव बगे।
जहां संत करे असनान दूजा तो कोई न्हाय न सके ॥४॥
जाके न्हाये से सुख होय तपत तेरे तन की मिटै।
तेरे जन्म मरण मिट जांय चौरासी का फंद कटे ॥५॥
यों कहते नाथ गुलाब अमरापुर वारा वास करे।

गुण गावे भानीनाथ आनन्द में सदा लगाही रहे ।।३।।

शब्द १०

दोहा–हम बासी उस देश के जहां जात वर्ण कुल नांह।
शब्द मिलावा हो रहा देह मिलावा नांह ॥

बहुर नहीं आऊंगा जाऊं हज़ारे देश ॥टेक॥

गुण की गठड़ी खोल दिखाऊं पांचतीन की रचना लाऊं।
लग रहा सीधा तार गगन चढ़ जाऊंगा ॥ १ ॥
अपने गुण पांचों दे दीने अपने अपने उन ले लीने।
हो तुर्या असवार परम सुख पाऊंगा ॥ २ ॥
उलटी पृथ्वी नीर मिलाऊं ओले नीर तेज में लाऊं।
तेज पवन में मेल पवन नभ लाऊंगा ॥ ३ ॥
टूटगई आस बास कित करिये
अपना न कोई कहो कहां रहिये
आठ पहर संग्राम में कैसे लाऊंगा ॥ ४ ॥
छूट गया भोग स्वाद गया जीका
जब लग रहा तब लग रहा फ़ीका ।
देखत आवे छींक तुरत उठ जाऊंगा ॥ ५ ॥
शब्द विहंगम बास बसाऊं
जो कोई सुने उसका जनम मिटाऊं
अजब रङ्गीला ताक उसी में लौ लाऊंगा ॥ ६ ॥

संता दीनी मौज अजब घर छाऊं
सुख सागर में डेरा लाऊं।
गुण गावे भानी नाथ अधर घर छाऊंगा ॥ ७ ॥

शब्द ११

दो०—भीखा बात अगम्भ की कहन सुनन की नाहिं
जो जाने सो कहैं नहीं कहै सो जानै नाहिं।

महरम हो सोई जाने भई साधो ऐसा देश हमारा हैरे।
बिनबादल बिजली वहां चमके बिन सूरज उजियारा हैरे॥
बिना नयन वहां मोती पुरोवे बिन स्वर शब्द उचारा हैरे।
भंवर गुफा में अनहद बाजे मुरली बीन सितारा हैरे॥
नरमल बूंद मिली दरिया मे नहीं मीठा नहीं खारा हैरे
जात वरण वहां सूझत नाहीं ना वहां वेद विचारा हैरे।
वहां जाय ब्रह्म बिन बैठे कहन सुनन से न्यारा हैरे॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो पहुंचेगा पहुंचन हारा हैरे।
इस पदको जो समझत बूझत अलख लखे साईं प्यारा हैरे॥

शब्द १२

दोहा—हम बासी उस देश के जहां पार ब्रह्म का खेल।
अगम का दीवा बल रहा बिन बाती बिन तेल॥

साधो हम हैं वासी वा देश के॥ टेक॥
हमरे देश में कोई चांद न सूरज रात दिना रहैं एक से।

सुरत निरत का जहां ताना पुरा कपड़ा बुने अलेख के।
हमारा कपड़ा महंगा बिकत है पहरें संत विवेक के।
हमरें देश का मरम को जाने सदा रहें सुख एक से।
कहें कबीर सुनोभाई सन्तो साधू साहिब एक से।

शब्द १३

दोहा—गुरु बिन माला फेरते गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है जाय पूछो वेद पुराण।
मेरे सारे दुख बिसर गये सतगुरु को मैंने शरण लई टेक।
और सखी सब दुबली तूं विरहन क्यों लाल।
अविनाशी की सेज पर मौजां हुई है निहाल ॥१॥
अविनाशी की सेज का कह कितना बिस्तार।
कहन सुनन कि गम नहीं पौढ़त बेपरवाह ॥२॥
सतवन्ती पीहर बसे अन्तर पिव का ध्यान।
कहती तो लाजां रहै ऐसा है आतम ज्ञान ॥३॥
हंसी नहीं मुसका गई रहे टकटके नैन।
कहें कबिरा लखगये हैं सखी सखी के सैन ॥४॥

शब्द १४

दोहा—जो कोई समझै सैन में वासे कहिये बैन।
सैन बैन समझै नहीं वासे कछु कहन ॥
मेरा राम सनेही जोगी रावलिया मेरी नगरी में उतरा है आय

चार खूंट की रमझम करता धरती धरे न पांव ।
तीन लोक झोली में राखे राई में रह्यो समाय ॥ १ ॥
जाकी सखी याय देखूँ जाका रूप लखा नहीं जाय ।
पोड़ी चाहे परतीत न छोड़ूं मेरे हिरदे में रह्यो समाय ॥
धरती काहु की ना रहूं बिन हर देखे रहा न जाय ।
अचरज रूप धरा अविनाशी श्रीनाथ गुलाब लुभाय ॥ ३ ॥

शब्द १५

दोहा - मन के बोहते रंग हैं पलट बदलैं खोय ।
एक रंग में जो रहे ऐसा साधु कोय ॥
मेरा मन बाणियारे अपनी बान कभी ना छोड़े । टेक ।
हेर फेर के दोनों पलड़े अन्दर कानी डांडी ।
मन में झूठ कपट हिरदे में डाट चौंसले मांही ॥ २ ॥
पूरे बाट परे सरकावे कमती बाट टटोले ।
पासंग माहीं डांडी मारे बेगा बेगा बोले ॥ ३ ॥
घर तेरे में कुबध किराड़ी छिन २ में चित चोरे ।
कुनबा तेरा बड़ा हरामी अमृत में विष घोले ।
जल में तूही थल में तूही घट २ में हर बोले ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो भरम बंधा जग डोले ॥

शब्द १६

दोहा-मूरख को समझावता ज्ञान गांठ का जाय ।

कोयला होय न ऊजला सो मन साबुन लाय ॥

जा पर कभी न आना जो जाके हिरदे ही में पाप ।
मात पिता का कहा न माने गुर की नहीं लगन में ।
पर तिरया से नेह लगावे सुरति नहीं भजन में ॥ १ ॥
कंचन मैला कभी न होवे दाग रति नहिं लागे ।
गठरी उसकी कौन छीन ले पहरे अदने जागे ॥ २ ॥
बाहर उजला अन्तर काला बुगले का सा भेष ।
बाहर मेल द्वेष हिरदे में भक्ति लगे ना लेश ॥ ३ ॥
गुरु मुख प्राणी पार उतर गये भव सागर जलदरिया ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो इनका सुमरण करिया ।४॥

शब्द १७

दोहा – मन के बहुते रंग हैं छिन २ बदले होय ।
इसके रंग जो ना रहे ऐसा बिरला कोय ॥

हीरा मन समझियो रे लोभी से तिरने का घाट ।टेक।
कथनी के शूरे घने सब बांधे हथियार ।
सत कोई बिरला डटे जित बाजे तरवार ॥ १ ॥
शूरा रण में आय के फिर को देखे बाट ।
क्यों २ पग आगे धरे आप कटे चाहे काट ।२॥
हीरा बीच बजार के सब निरखें साहूकार ।
चलते गाहरी नांह मिले सब को उलट सुधार ॥ ३ ॥

[illegible] प्रीतम के द्वार ।
तन मन अपना वारि के सांई मिला दुई बार ॥ ४ ॥
तन मन सौंपे गुरु अपने को सत्य शब्द पहचान ।
मुश्किल से आसान होगई अब से सौंप दई जान ॥५॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो लीजो आप संभाल ।
चेता जाय तो चेत बावरे ना आयगा तोय काल ॥६॥

शब्द १८

दोहा—मन के मते न चालिए मनके मते अनेक ।
मन पर जो असवार हैं ते साधु कोई एक ॥
जिन्होंने मन मार लिया मैं तो उन सन्तों का हूं दास ।टेक
आपा मार जगत में बैठे नहीं किसी से काम ।
उन में तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम ॥
मन मारा तन बस किया सभी भरम भये दूर ।
बाहर तो कुछ सूझे नहीं अन्दर झलके नूर ॥ २ ॥
प्याला पीलिया नाम का जी छोड़ा जगत का मोह ।
हमको सतगुरु ऐसे मिलगए सहज मुक्त गई होय ॥३॥
नरसो जी के सतगुरु स्वामी दिया अमीरस प्याय ।
एकबूंद सागर में मिल गई कहा करे यमराय ॥ ४ ॥

शब्द १९

दो०=शब्द ही मारे मर गये शब्द ही तज गये राज ।

जिन ये शब्द पिछानियां घरे उन्हीं के काज ॥
चोट सकुली शेल की लागत लेत उश्वांस ।
चोट सहारे शब्द की तास गुरु मैं दास ॥
बायल ना जीवे जाके लगे शब्द के सेल । टेक ।
लागी लागी सभी कहैं रे लागी नाहीं एक ।
लागी जबही जानिये रे घाव न आवे मेल ॥ १ ॥
लागी उनकी जानिये रे राज तजे अस खेल ।
अन्दर दीवा बल रहा रे घला प्रेम का तेल ॥ २ ॥
पढ़ना लिखना है नहीं रे सत संगत का खेल ।
चार वेद घट में बसे हैं सांचे गुरु से मेल ॥ ३ ॥
सतसंग सार अनेक हैं रे काटैं यम की बेल ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो झूठे जगत के खेल ॥ ४ ॥

शब्द २०

दोहा—राम नाम मणि दीप धर जीभ देहरी द्वार ।
तुलसी बाहर भीतरो जो चाहे उजियार ॥
हरि रस ऐसा रे जाके पीये से अमर हो जाय । टेक ।
आगे आगे दौं जरे पाछे हरियल होय ।
बलिहारी वा वृक्ष की जड़ काटे फल होय ॥१॥
राम रस महंगा मोल का पीवे विरला कोय ।
हरि रस को तो जो जन पीवे धड़ पे शीश न होय ॥२॥

भक्ति करी तो कुल नहीं कुल बिन भक्ति न होय।
दो घोड़ों के ऊपर हम ने चढ़ा न देखा कोय ॥३॥
भक्ति करो और कुल रहो अड़े रहो दरबार।
दो घोड़ों की कौन चलावे चारों पै हो असवार ॥४॥
राम रस पीया नाम देव पीप और रहदास।
दासकबीरा ने ऐसा पीया फिर पीवन की आश ॥५॥

शब्द २१

दोहा—जो सिर साटे हरि मिले तो पुनि लीजिये दौड़
नारायण ऐसी न होय गाहक आवे और ॥
बनजारिन नयन उघार (उठ बिरहन सुरत संभार)
टांडा तेरा लद जायगा। टेक।
टांडा तेरा लद चला है तू बिरहन रही सोय।
जब जागी तब एकली है नयन गमावे रोय ॥ १ ॥
चन्दन की चौकी बनी है बीच में जड़ दियेलाल।
हीरां कीपुं ही लगी है पच पच मरे सुनार ॥ २ ॥
लाखों सिर तू दे चुकी है यमराजा की भेट;
एक शीश तैंने ना दीया है श्री नारायण हेत ॥ ३ ॥
सिर माटी का तूंमड़ा है सहो कर के जान।
सिर के साटे हरि मीले तो भी सस्ता जान ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो केसवा थारी गत अगम अपार,

बिन आदा हरि नाम पर हैं सन्त उतारें पार, ५

शब्द २२

दोहा-काम क्रोध मद लोभ की जब तक घट में खान।
तुलसी पंडित मूर्खा दोनों एक समान ॥

गली तो च्यारों बन्द पड़ी,
म्हारो पिया मिलन कैसे होय ।टेक ।

काम क्रोध मद लोभ मोह ने घेरी च्यारों गैल ।
इन गलियन मेरे प्रीत बसते कैसे करूं मैं वाको सैल ॥१॥
पांच पच्चीस पहरवा ठाढ़े रोक लिये सब ठाम ।
यह बिधिना ने कैसी कीनी बैरी बसायो म्हारे गाम ॥२॥
आशा तृष्णा बड़ी दुहेली इनमें रहा समाय ।
कनक कामिनी गहरा फन्दा अन्त लखो नहीं जाय ॥३॥
ज्ञान भक्ति वैरागयोग का मारग दिया बताय ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो ना कोई आवै न जाय ॥४॥

शब्द २३

दोहा-बालक रूपी साइयां खेले सब घट मांह ।
जो चाहे सो करत है भय काहु का नांह ॥

आपही धारमधारीहो स्वामी आपही खेल खिलारी हो।टे०
तम्बू से असमान बनाये जमीं गलीचा डारी है ।
चन्द सूरज दो मिसल बनाये तारागण फुलवारी है॥१॥

कुल नाम को चौसर मांडो लोपासा कग सारी है।
जिसकी नरद जीतघर आवेसं नर दुघड़ खिलारी है ।२
उसको चीन्ह बिहंगम चोरा जिसकी शून्य अटारी है।
जापर सतगुरु राजी होवें उसका जगत भिखारी है॥३॥
अमरलोक का किया पयाना ज्ञान घोड़े असवारी है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अबके जीत हमारी है॥४॥

शब्द २४

दोहा—जहां दया तहां धर्म्म है जहां लोभ तहां पाप।
जहां क्रोध तहां काल है जहां क्षमा तहां आप॥

कामक्रोध मद लोभ मोह ने होगुरु इनने मेरी मत मारी
केवल ब्रह्म रूप था मेरा पच तत्व में लिया बसेरा।
इन्द्रिय आदि कर्म से लागी बुद्धि है सब से न्यारी ॥१
आदि जन्मका हूं अधिकारी दुःख में याद आई बुधस री
जनुधा खोज कनौजके देखा बिगड़ रही केसर क्यारी ॥२
शून्यसमाधमें जायसमाया चेला गुरुवा कुछ नाहीं पाया।
आपही आप पुकारत आया अब समझा मूर्ख सारी ॥३।
धुनध्या आसन अमर सिंहासन धुनमें प्यारा करे सुखवासन।
मच्छन्दर गोरख बोले जान २ हुआ हितकारी ॥४॥

शब्द २५

दोहा-धूम धाम में दिन गया स धन होगई सांझ।

एक घड़ि हरि ना भजा मन जननि भाई बाँझ
भजन बिन बावरे तैंने हीरासा जनम गवांया । टेक ।
कभी न आया सन्ते शरणा ना तैं हर गुण गाया ।
नह २ मरा बैल की न्याई सोय रहा उठ खाया ॥
ये संसार हाट बनिये को सब जगसौदा आया ।
चातर माल चौगुणां कीना मूरख मूल ठगाया ॥२॥
ये संसार फूल संभल का शोभा देख लुभाया ।
मारी चौंच रुई निकस्याई मूढ़ी धुन पछताया ॥३॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू ना आया ॥४॥

शब्द २६

दोहा- सलिल मोह की धार में बहगये गहन गम्भीर ।
सूक्षम मछली सुरत है चढ़े जो उलटे नीर ।
मोह माया की धारा में जग बहगयोरी ।टेक।
रावण दुर्योधन से बह गये कोई २ साधुजन रह गयोरी ॥
मैं मेरे में जगत आय सब सत्गुरु नवका हुै गयोरी ।
यह संसार स्वप्न की लीला सत्गुरु मोते कह गयोरी ॥
जो कोई लाग्यो विषय भोग में सर्वस अपना दे गयोरी ।
जिस ने रटा राम को निश दिन वही यहांसे कुछ लेगयोरी
कहे रघुनाथ शरण गुरु की ले ब्रह्म रूप जीव हो गयोरी ।

दो० ज्यों तिल मांही तेल है चकमक मांही आग ।
तेरा सांई तोय में जाग सके तो जाग ॥

मन्दर में कांहे ढूंढती फिरे बावली में भगवान (घट ही में दीनानाथ) ॥टेक॥

सूरत तो मन्दर में बैठी मुख से नाहीं बोले ।
करनी पार उतरनी बन्दे वृथा जन्म क्यों खोले ॥१॥
गऊ मुख से गंगा निकली पांचों कपड़े धोले ।
बिन साबुन तेरा मैल कटेगा हर भजन हलुवा हो ले ॥२
तन कर कूंडी मनकर साबुन याही में शील समोले ।
सुरत ज्ञान का करे न मोगरा दिल का दाग़ न धोले ॥३
शील सत्य को नवका चढ़के हर के दर्शन ना ले ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो पर्वत राई के ओलहे ॥४॥

शब्द २८

दोहा-ज्ञानी भूले ज्ञान कथ निकट रह्यो निज रूप ।
बाहर खोजे बापरो भीतर वस्तु अनूप ॥

जागों ना जारे तेरी काया में गुलजार । टेक ।
करनी क्यारी बोय के रे रहनी कर रखवार ॥
दया पौद सूके नहीं क्षमा शील जग हार ॥ १ ॥
मन माली पर बोध करे संयम की कर बार ।

दुर्मति काग नहाय के रे देखे क्यों न बहर ॥ २ ॥
मन गुलाब चित केवड़ा रे फूल रही फुलवार ।
मुक्तिकली जहाँ खिल रही सूंघ पहरवे क्यों न द्वार ॥ ३
लोभ लहर गहरी नदी रे लम्ब चौड़ी धार ।
निगुरे २ बह गये संत उतर गये पार ॥ ४ ॥
अष्ट कमल दल ऊपर रे महिमा अपरम्पार ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवा गमन निवार ॥ ५

शब्द २६

दं० सत्य बराबर तप नहीं झूट बराबर पाप ।
जाके हिरदे सच है ताके हिरदे आप ॥
सत्य नाम करतारे म्हारे सत्गुरु,
निश्चय लहो उतारे म्हारे रामा ॥ टेक ॥
रामा राम बसे घट भीतर बाहिर हाथ न आवे मोरे रामा
सत्गुरु की तुम सेवा करलो वो तुम्हें राह बतावे मोरे रामा
नाभि कमल से रस्ता चालयो,
सहजाई आवे जावे मोरे रामा ।
आगे महल त्रिकुटी कहिये,
वहाँ गये सुध पावे मोरे रामा ॥ २ ॥
महल त्रिकुटी जग मग झलके,
देखत ही सुधरावे मोरे रामा ।

झीनी झीनी बात होय आनंद की,

आगे को उठ धावे मोरे रामा ॥ ३ ॥

गुरु परताप संत की संगत,

कोईने चोई पावे मोरे रामा ।

अरख मछन्दर जती गोरख बोले,

गुरु अपना दरशावे मोरे रामा ॥ ४ ॥

शब्द ३०

दोहा- जैसे लकड़ी ढांक की ऐसा यह तन देख ।

यामें केशु फुल रहा या में पुरुष अलेख ॥

बंगला भला बना दरवेश जामें नारायण परवेश ।टेक

पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों को गारा ।

छत्तीसों की छत बनाकर चिन गया चिननें हारा ॥

इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का खंभा ।

आवत जावत कछु न जाने देखो बड़ा अचम्भा । बंग०

इस बंगले में चौपड़ मांडी खेलें पांच पचीस ।

कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत ॥

इस बंगले में पातर नाचैं मनुवा ताल लगावे ।

सुरत निरत के पहर घूंघरु राग छत्तीसों गावे । बंग०

कहैं मछन्दर सुन बाले गोरख जिन यह बंगला गाया ।

इस बंगलेके गानेवाला बहुर जन्म नहीं आया । बंग०

शब्द ३१

दो० कबीर हम घर जारो आपना लियो पलीता हाथ।
अब घर जारैं तास को जो चलै हमारे साथ ॥

साधो सूवा बेटा जायो, गुरु परताप साधु की संगत
खोज कुटुम सब खायो ॥ टेक ॥

जनमत माई जनक खाई पाप पुण्य दोऊ भाई ।
काम क्रोध दो काका खाये खाई तृष्णा दाई ॥ १ ॥
रागद्वेष पारोसी खाये शुभ अशुभ दोउ मामा ।
मोह नगर का राजा खाया तब पहुंचा उस धामा २
दुबिधा दादी खई वह दादा मुख देखत ही मूआ ।
मंगल चार बधाई बाजी जब यह बालक हूआ ।।३।।
ज्ञान नाम धर्यो बालक का शोभा बरनी न जाई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो घट २ रहा समाई । ४ ।

शब्द ३२

दो–गुरुबिन भरमतफिरि ढूंढता भेद लिये बिन श्वास ।
केहरी वपु छाया निरखि परया कूप प्रकाश ॥
अलि एजी पायो अब तो हरी को पायो ।
कलह कल्पना मन की मेटी भय और भरम भगायो ॥
रूप न रेख कछू नहिं जाके सोऽहं ध्यान लगायो ।
अजर अमर अविनाशी देखो सिंधु सरोवर न्हायो ॥१

शब्द ही शब्द भयो उजियारो सतगुरु भेद बतायो,
अपन को आपा ही में पायो ॥ २ ॥
जैसे कामिन सुतले सोई स्वप्ने माहिं भुलायो,
जाग परयो पलिका पर देखे, ना कहीं गयो न आयो ॥ ३
जैसे कामिन कंठ को हीरा आभूषण बिसरायो ।
संग की सहेली भेद बतायो जीव को भरम नसायो ॥
जैसे मिरग नाभि कस्तूरी डोलत बन बन धायो ।
आशा श्वास भई जब आगे पलट निरन्तर आयो ॥४॥
कहा कहूं वा सुख की महिमा गूंगे ने गुड़ खायो ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ज्यों का त्यों दरशायो ॥६

शब्द ३३

दोहा—अंगन बेल आकाश फल अनब्याई का दूध ।
ससासिंह के धनुषको खींचे बांझ का पूत ॥

नाचो मैंडुकी री तू तो पानी में की रानी । टेक
कछवा तेरा भैया भतीजा ढोल लगे दौरानी ।
बगला तेरा ढाटा देवर वाय देख मुसकानी ॥ १ ॥
अंधे ने मछके को बींधा बिन अंगुली सूई चलानी ।
बिन ग्रीवा के माला पहरी बिन जिह्वा के बानी ॥२॥
चार चिरैया मंगल गावें टींटा ताल बजावे ।
सूतल पहर गधैया नाचे ऊंट बिसन पद गावे ॥३॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो ये पद है निरबानी ।
जो इस पद की निन्दा करे है उसको नर्क निशानी ॥४

शब्द ३४

दोहा- निश्चय होकर हरि भजे मन में राखे सांच ।
इन पांचन को बस करे ताहु न आवे आंच ॥

मारग में लूटें पांच जनी । टेक

पांच पच्चीसों ने घेरा घाटा साधुजन पड़गये उलटी बाटा
घेर लिया सब औघट घाटा कलियुग चमके सेलअनी ॥१
आथादश्या नदियां भारी बह गये संत बड़े हिमधारी ।
जो हमरे हो शरण तिहारी पार लगावो आप धनी २
बनमें लुटगये मुनिजन नागा हम गई ममता जलटा भागा
जाके कान गुरु ना लागा शृंगी ऋषि से ज्ञान धनी ॥३
शङ्कर लुट गये नेजाधारी परजा रैयत कौन बिचारी ।
भूल पड़ी कर्मन की मारी तिरगुण फूंक रहीं तीन जनी ।
रामानन्द दिया गुरु हेला दास कबीर चरण का चेला ।
बंका मारग पंथ दुहेला सुनरया सिरजनहार धनी ॥५॥

शब्द ३५

दो०-पश्ची खोज मीन के मारग कहैं कबीर दो भारी ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी ।
तन मन धन बाजी लागरही(लागरहीरे बाधा लागरही

चौपड़ मांडी चौप से रे हंस मन छनबाजी लाय ।
हारी तो पीव की भई रे जीतूं तो पिया मेरा है ॥१
चार जनी घर एक है रे वर्ण २ के हैं लोग ।
मनसा वाचा कर्मणा है प्रीति निभैबो होइ ॥ २
लख चौरासी भरम के है पौहपर अटकी आय ।
जो कब के पौह ना पड़े है बहुर चौरासी में जाय ॥
कहैं कबीर धर्मदास से है जीत भई को हार ।
अबके जो बाजी जीत जाय रे वो ही सुहागन नार ॥

शब्द ३६

दोहा- कबीर सोय के क्या करे बैठा रहु अरु जाग ।
जाकेसङ्ग ते बीछुरयो वाही के संग लाग ॥

मेरी सुरत सुहागन जाग री । टेक
क्या तू सोवे मोह नींद में उठके भजन बिच लाग री ।
अनहदशब्द सुनो चितदे के उठत मधुरधुन राग री ।२
चरण शीशधर बिनती करियो पावेगी अचल सुहागरी ।३
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरता जगत् पीठ दे भागरी ४

शब्द ३७

मेरी सुरति गगन में जाय रही । टेक
त्रिकुटी महल पर चढ़ कर देखा,
जगमग जोत जगाय रही ॥ १ ॥

अमृत वर्षे बादल गरजे,
बिजली चमक मन भाय रही ॥ २ ॥
दशवें महल में सेज पिया की,
चुन चुन फूल बिछाय रही ॥ ३ ॥
ब्रह्मानन्द देह सुध बिसरी,
सहज स्वरूप समाय रही ॥ ४

शब्द ३८

अनहद घन सिर पर बाज रही । टेक ।
बाजत शंख मृदंग बांसरी घनगर्जन अति छाय रही ॥
सुनकर मस्त हुआ मन मेरा चंचलता सब भाज गई ॥
तन के कर्म धर्म सब छूटे लोक वेद की लाज गई ॥
ब्रह्मानन्द गिरा गम नाहीं सहज समाधि बिराज रही ।

शब्द ३९

घुंघट खोल दे तेरे पलकों के
आगे है राम भरम ने तोड़ दे । टेक ।
पलकों आगे अलख बावरी नूर रहा भरपूर ।
अन्दर बाहर सर्वत्र भरिया क्या नेड़े क्या दूर ॥ १ ॥
शिर से शक्क उतार चुनरिया परदा भरम उठाय ।
जब तुझे दरसे नित्य बावरी रोम रोम रहा छाय ॥२
पुस्तक लिखिया न जाय बावरी रेख खिचे ना खीच ।

दृष्टिन सुष्टिन आवे सजनी पवना ते बारीक ॥ ३ ॥
दरिया लहर भेद ना बीरी जीव ब्रह्म न दोय।
एक ही ब्रह्म सकल घट व्यापी दिलकी दुरमत खोय॥
हाथ में कङ्गन बांध सुहागन काय को लिया दुहाग।
हाथ में मेंहदी नयनन सुरमा सारो श्रीनाथ गुलाब॥५

शब्द ४०

सुरत मेरी राम पलक मेरी राम से लगी समझ सुहागन
सुरता नार तीरथ में माया जाल में फंसो ॥ टेक ॥
लगनी लहंगा पहर सुहागन बीती जाय बहार।
धन जोबन है पाहुना री आवे न दूजी बार ॥ १ ॥
राम नाम का चुड़ला पहरो निर्गुण सुरमा सार।
नखबेसर हरि नाम जीरी उतर चलोने परले पार ॥२॥
ऐसे वर को कहा वरूं जो जन्मतड़ा मर जाय।
वर पाऊ औ सांवरो जी चुड़ला अमर हो जाय ॥३॥
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो जी हरि ठग ले गयो मोय।
लख चौरासी मोरचे जी पल में हे डारे तोर ॥ ४ ॥
सुरत चली जहां मैं चली निरकार झनकार।
अविनाशी की पौर पर रे मीरां करे पुकार ॥ ५ ॥

शब्द ४१

दोहा—शब्द बराबर धन नहीं जो कोई जाने बोल।

हीरा तो दामों मिले, शब्द का मोल न तोल ।
शब्द झड़ लाग्यो हे बरसण लाग्यो रंग । टेक
जन्म मरण की चिन्ता भागी,
सुमरण नाम भजन लौ लागी ।
म्हारे सतगुरु दीनी सैन, सत्य घर पाणयोरी ॥१॥
चढी सुरत पश्चिम दरवाजा,
तिरकुटी महल पुरुष एक राजा,
अनहद की झनकार बजे जहां बाजारी ॥२॥
अपने पिया संग जाकर सोई,
संशय शोक रह्या नहीं कोई ।
कट गये करम कलेश भरम भय भागारी ॥ बरसण ३
शब्द बिहंगम चाल हमारी,
कहै कबीर सतगुरु दई तारी,
रिमझिम रिमझिम होय काल वश आय गयारी ॥४

शब्द ४२

दोहा—गगन गरजे वर्षे अमी, बादल गहर गम्भीर ।
चहुं दिश दमके दामिनी, भीजे दास कबीर ॥
बादला झुक आया भीजे म्हारो कायारो चीर । टेक
प्रेमघटा ओलर आइरे गगन से,
तनमन भीजगया हरि रङ्ग से ।

बरषे निर्मल नीर इन्दु ज्यों लहराया ॥ १ ॥
जहां वर्षे जहां बिजली चमके,
घन गरजे और दामिनी दमके ।
वर्षे अमृत धार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥ २ ॥
बस्ती बसो चाहे बन उठ जावो,
तीरथ जावो चाहे मल मल न्हावो ।
जिनका तनमन होगया फकीर शब्दमें चितलाया ॥३॥
नाथ गुलाब दिया गुरु हेला
भानी नाथ सुनो निज चेला ।
उलट पवन की डाट गगन धारो घर छाया ॥ ४ ॥

शब्द ४३

दोहा --सुमरण से सुख होत है, सुमरे से दुःख जाय ।
कहैं कबीर सुमरण किये, स्वामी में मिल जाय ॥

भजन में होत आनन्द आनन्द । टेक ।
बरसैं शब्द अमी के बादल भीजें महरम सन्त ॥ १ ॥
कर अस्नान मगन होय बैठे चढ़ा शब्द का रंग ॥२॥
अगर बास जहां ततकी नदियां बहत धारा गंग ॥ ३ ॥
तेरा साहिब है तेरे माहीं पारस परसे अङ्ग ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो जपले ओ३म सोऽहं ॥५॥

शब्द ४४

दो०–राम नाम रटते रहो जब लग घट में प्राण ।
कबहुक दीनानाथ के भणक पड़ेगी कान ॥

तेरा जन राम रसायन माता । टेक ॥
प्रेम रस निधि जाको उपजे छोड़ न कतहू जाता ।१
सोवत हरिहरि, बैठत हरिहरि, हरिरस भोजन खाता
सुफलजन्म हरिजनका उपजिया कीनो है सात विधाता
सकल समूह ले उधरे नानक पूरण ब्रह्म पिछाता ॥४॥

शब्द ४५

दो०–बेल होत वर्षा समय करत वृक्ष सौं प्रीत ।
प्राण गये छांड़े नहीं अपनी उत्तम रीति ॥

हूं वारी मुखफेर पियारे करवटदे मोय काहेको मारे टे०
करवतभला न करवट तोरी लागलगे सुन बिनती मोरी
तन चीरो तो मुखना मोड़ू लगी प्रीति अब कैसे तोड़ूं ।
हमतुम बीच हुआ नहींकोई तुमहो पुरुष नारहम होई
कहत कबीर सुना नरकोई हमन किसीके हमारा न कोई

शब्द ४६

दो०–पांच पखेरू पांच पग तीन चोंच मुख दोय ।
तिरलोकी को चुगो करै लखै सो पण्डित होय ॥

एसो २ हाल लखायो म्हारे सतगुरु,

देख अचम्भा आया रहो जी ॥ टेक

बिना मूल एक बिरछा देखा,

बिन पत्तर वाको छाया रहो जी ॥

बिना देव एक शक्ति देखी,

अलख पुरुष थारी माया रहोजी ॥१

बिन पानी स्नान बनाये,

बिन अग्नि तप आया रहो जी ।

धरणी नहीं जहां आसन मांड्यो,

बिन धुनि ध्यान लगाया रहो जी ।२

भेद अभेद कहा नहीं जावे,

निर्मल मण्डप छाया रहो जी ।

जित देखूं तित आपा ही दीखे,

दूजा नजर नहीं आया रहो जी ॥ ३

पांच पचीसों करें रखवाली,

तिरगुण रंग लगाया रहो जी ।

निर्गुण सरगुण दोन्हों ठाड़े,

बीच में आप समाया रहो जी ।

उलटा वेद मरम कोई जाने,

काल जीत घर आया रहो जी ।

कहत कबीर सुनो भाई साधो,

प्रेम मगन हो के गाया रही जो ॥५

शब्द ४७

दो०-काया काठी कालघुन, जन्म घुन २ खाय।
काया माहीं काल है, काहू भरम न पाय ॥

चरखा चलता नाहीं रे मेरा चरखा हुआ पुराना ।टेक
पग खूंटा दोउ हिलने लागे बीच मण्डला ढलकाना।
सभी पखड़ीयां पड़गइं ढीली चलता नाहिं मन माना॥
नया चरखला रङ्गा चङ्गा सब का चित्त चुरावे ।
जब चरखे का रङ्ग उतर गया देखा हू ना भावे ॥
रसना तकली कुबल खागई कहो कैसे कर छूटे ।
शब्द तार सीधा नहीं निकसे घड़ी २ पै टूटे ॥ ३॥
मोटामहीन कातलो कुड़ियां कर अपना सुलझेड़ा ।
कहैं कबीर सुनों भाई साधो चेतो क्यों न सवेरा ॥४॥

शब्द ४८

दो०-शून्य शिखर में जाय के देखै विरला कोय ।
अनहद का बाजा बजै झिलमिल २ होय ॥

मोय नीको लागैं बाजे अनहद तूर ॥ टेक
सोऽहं सोऽहं ध्वनि होतहै चहुंदिश रही भर पूर ॥१॥
रैन दिवस घन घोर उठत है क्या नेड़े क्या दूर ॥२॥
कहत कबीर सुनों भाई साधो बर्षे नूर ही नूर ॥३॥

शब्द ४६

हरि भज मन मेरे पद निर्वाण,
बहुर न होवे तेरा आवन जान ॥टेक॥
सब ते उपजाई भरम भुलाई,
जिसे तू देवे तिसे बुझाई ॥१॥
सतगुरु मिले तो संशय जाई,
किसे पूजे दूसरा नज़र न आई ॥२॥
एके पाथर कीजे भाव,
दूजे पाथर दीजे पाव ॥३॥
जो वह देवता तो वह भी देवा
कहै नाम देव हरी की सेवा ॥४॥

शब्द ५०

मैं बौरी मेरा राम भतार रच रचना को करूं शृङ्गार टे०
भले निन्दा निन्दो लोग तन मन धन राम प्यारे योग ॥
वाद विवाद काहु से नहीं कीजे रसना राम रसायन पीजे॥२
अब जियेजान ऐसी बन आई मिलूं गोपाल निशान बजाई
अस्तुति निन्दा करो नर कोई नामे श्री रङ्ग भेटल होई

शब्द ५१

दो०—सभी खिलौना खाण्ड मध्य खाण्ड खिलोनेमाँह
ऐसे ही सब जग ब्रह्म में ब्रह्म जगत के मांह ॥

एक अनेक व्यापक पूरक जित देखूं तित सोई । टेक
माया चित्तर बिचित्तर बिमोहित बिरला बूझत कोई ॥१
सब गोबिन्द है सब गोबिन्द है गोबिन्द बिन नहीं कोई
सूत ऐक मणि सहस्त्र जैसे ओतप्रोत प्रभु सोई ॥ ३ ॥
जल तरङ्ग और फेन बुद् बुदा जल से भिन्न न होई ४
यह प्रपञ्च पार ब्रह्म की लीला बिचरत आन न कोई ५
मिथ्या भ्रम और स्वप्न मनोरथ सत्य पदार्थ जाना ॥६
सुकृत मनसा गुरु उपदेशो जागत ही मन माना । ७।
कहत नामदेव हरि की रचना देखो हृदय बिचारी ॥८
घट घट अन्तर सर्व निरन्तर केवल एक मुरारी ॥ ९ ।

शब्द ५२

दो०-नुगरा मानस मत मिलो पापी मिलो हज़ार ।
एक नुगरे की पीठ पै सौ पापियों का भार ॥
मरना तुझे है जरूर गुरु कोई धारोरे टेक ॥
बिरले जीव बचन गुरु माना उनका चढ़ा सरूर ॥ १॥
शांति सरोवर मंजन कीना छोड़ा सभी ग़रूर ॥ २ ॥
अन्तर दृष्टि करी घट भीतर निरखा झिल मिल नूर ३
पद्म दास फिर सत्य लोक में निरखा कुल हुजूर ॥ ४॥

शब्द ५३

दो०-गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान ।

तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीनो दान ॥
हमारे गुरु ने दीनी है ज्ञान जड़ी। टेक
यह तो जड़ी मोय प्यारी लागे अमृत रस की भरी ॥१
काया नगर में अधर एक बंगला वा में गुप्त धरी ॥२
पांच नाग पचीस नागिनी मूंघत तुरत मरी ॥३
इस काली ने सब जग खाया सतगुरु देख डरी ॥४
कहैं कबीर सुना भाई साधो लय परधार तरी ॥५

शब्द ५४

दो०-मैं अपराधी जन्म का नख शिख भरा विकार।
तू दाता दुख भञ्जना मेरी करो संभार ॥

लज्जा मोरी राखो ना श्याम हरि।टेक
कोनि कठिन दुसासन मोते गह कैशों पकरी ॥ १ ।
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नग्न करी ॥ २ ॥
पांचो पण्ड सभी बल हारे इन से कछु न सरी ॥ ३
भीष्म द्रोण विदुर भये विस्मय इन सब मौन धरी
अब नहीं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुमरी ॥५॥
बसन प्रवाह दिये करूणा निधि सेना हार परी ॥६॥
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यारों की काहि डरी ॥७॥

शब्द ५५

दोहा–प्रेम २ सभी कहैं, प्रेम न चीन्हे कोय।
जौन प्रेम साहिब मिलो, प्रेम कहावे सोय॥

जगत् में झूठो देखी प्रीत। टेक
अपने सुख से सब जग लागे क्या दारा क्या मीत॥१
मेरो २ सभी कहत हैं हित से बांधी चीत॥२॥
अन्त काल संगी नहीं कोई यह अचरज कि रीत॥३॥
मन मूरख अजहूं नहीं समझत सिख दे हारो नीत॥३॥
नानक भव जल पार परे जो गावे प्रभु कीगीत॥५॥

शब्द ५६

दोहा–संगत से सुख ऊपजैं कुसंगत से दुख होय।
कहैं कबीर तहां जाइये साधु संगजहां होय॥

सन्त समागम है आज हमारे हो रंग। टेक
कथा कीर्तन गावन धावत अद्भुत सुने परसंग॥१॥
दिल दरिया में भंवर परत हैं उठ रहे अनन्त तरंग॥२॥
त्रिकुटी महल में चाल चलो ना वहत धारा गंग॥३॥
क्या कहूं कुछ कहत न आवे सूरत रूचत अभंग॥४॥
दास गरीब मिटे सब झगड़ा करो साध सत्संग॥५॥

शब्द ५७

दो०–हरि व्यक्ति की पीठ पै अनन्त शक्ति रही विराज।
अगम निगम खोजत फिरे कोई न पावे काज ॥

हरि की गति नहीं कोउ जाने । टेक

जोगी जती तपी पच हारे अरु बहू लोग सियाने ॥१॥
छिन में राय रङ्क को कारे राय रङ्क कर डारे ॥ २॥
रीते भरे भरे ढरकावे यह ताको व्यवहारे ॥ ३ ॥
अपनी माया आप पसारे आप ही देखन हारा ॥ ४॥
नाना रूप धरे बहुरङ्गी सबते रहै नियारा ॥ ५ ॥
अनन्त अपार अलख निरंजन जिन सब जग उपजायउ
सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लायउ

शब्द ५८

दो०–मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार ।
तरुवर से पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार ॥

सब कुछ जीवत को व्यवहार । टेक

मात पिता भाई सुत बान्धव और पुन घरकी नार ।
तनसे प्राण होत जब न्यारो टेरत प्रेत पुकार ॥ १ ॥
आधी घड़ी कोउ नहीं राखत घरते देत निकार ॥३॥
मृगतृष्णा क्यों जग रचना है देखो हृदय विचार ॥४

सत्गुरु शरण सन्त की सेवा काम क्रोध मद मार ॥५
कहै नानक भज राम नाम नित्य जाते होय उद्धार ॥६

शब्द ५९

सत्गुरु मिले म्हारे सारे दुख बिसरे,
अन्तर के पट खुल गये री।
ज्ञान की आग जली घट भीतर,
काट कर्म सब जल गये री॥
पांच चोर लूटें थे रात दिन,
आप ते आप ही टल गये री।
बिन दीपक म्हारे भया उजाला,
तिमिर कहां जाने नस गये री॥
तिरवेणी से म्हारे धार बहत है,
अष्ट कमल दल खिल गये री।
कोटि भानु म्हारे हुआ प्रकाशा,
और ही रङ्ग बदल गये री।
अठसठ तीरथ हैं घट भीतर,
आपस में रल मिल गये री॥
शून्य मन्डल में वर्षा हुई,
अमी के कुन्ड उभल गये री।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,

नूर में नूर जो मिल गये री ॥

शब्द ६०

दो०-तीरथ न्हाये एक फल सन्त मिले फले चार।
सत्गुरु मिलें अनेक फल कहै कबीर बिचार॥

मैं कैसे आऊंगी सांवरिया थारी बिकट नगरिया टेक।
नाम निशानी थारा पन्थ दुहेला,
चढ़त देख मेरा तन मन जरिया।
जब लग नेजू थारी पहुंचत नांही,
तब लग आवे खाली गगरिया ॥२
बेगमपुर सोईजन जावें,
रोम२ जिन के प्रेम को पुरिया ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सोई जन पहुंचे,
ब्रह्म अग्न पर जिन का तन मन जरिया ॥४

शब्द ६१

दो० श्वांस २ में राम जप, वृथा जन्म मत खोय।
ना जानूं इस श्वांस का, आवन होय न होय ॥

तुम राम सुमर लो मंज़िल कठिन पड़ी ।टेक ।
श्वांस तेरा ये बिरथा जावे मानुष जन्म फेर नहीं पावे
आंख खोल जरा किधर लखावे शिर पर मौत खड़ी ॥

भाई बन्धु तेरा कुटुम्ब कबीला यम लेचले जब होणयाटीला
नारी भी तेरी प्रीत छबीला रोवेगी खड़ी खड़ी ॥
इन्द्री वेग बड़े बलवानो वेद पढ़े पण्डित मुनि ज्ञानी।
हार चले स्वामी ब्रह्मचारी हुल गये घड़ी रे घड़ी ॥
चतु रूप बनावा चहैं नाक कहैं हम इतर लगावैं ।
कान कहैं मानो गन्धर्व गावैं पांचों की बन्धी है लड़ी ॥
रसना रस इन्द्या चड़वावे काम जो वेश्या से लिटवावे ।
हरनन्द कहै भाई राम बचावे भूलो न एक घड़ी ॥

शब्द ६२

तू तो कोई अजब है तेरा अजब तमाशा जग में जोर। टेक।
तुही राम तैंने रावण मारा तू है नन्दकिशोर ।
तुही इन्द्र इन्द्र सन तेरा तू बरसे घनघोर ॥ १ ॥
तुही ब्रह्मा तुही विष्णु महादेव तू कमला पति गौर ।
रूपों में सब रूप धरे है तुही करे है किशोर ॥ २ ॥
पांच तत्व और तीन गुणों में दशों दिशा चहुं ओर ।
पिण्ड ब्रह्माण्ड में तु ही विराजे तू पूरण सब ठौर ॥
तू ही गुप्त तू ही मुक्ता घट २ ब्रह्म चकोर ।
चरण दास सेवक ने भाखे दूजा नहीं है कोई और ॥ ४ ॥

शब्द ६३

दो०- वह दिन गया आकार्थी, संगत भई न सन्त ।
प्रेम बिना पशु जीवना, भक्ति बिना भगवन्त ॥
अच्छे दिन पीछे गये, हरि से किया न हेत ।
अब पछताये होत क्या, चिड़िया खाया खेत ॥
हरि के नाम बिना तेरा जन्म अकारथ जाय ॥ टेक
जो नर बैठें सभा बिरानी भजन भागवत नाहिं सुना
वे नर होंगे अब अपराधी माता ने एक पशु जना ।१
कोटि यज्ञ और कोटि गऊचे दान करो सुमेर घना ।
बिना भजन तेरी मुक्ति नहोगी अठसठ तीरथ न्हावे नन्हा
ध्रू सुमेर सभी ढिग आयेंगे शेषनाग धरणी धरना ।
चांद सूर्य एक छिन में जायेंगे तूनर जीवे कितना दिना॥
सात समन्दर पार बसरले ना कोई होगा अपना ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह जीवन जैसे सुपना ॥४

शब्द ६४

चरखा तोहि अजब मिला तूतो कात सुहागन नार ।
कारीगर ने घड़ा चरखला चौंसठ चन्द लगाय ।
पूर्व जन्म से तोहि मिल्यो है कातें न मन हर्षाय ॥१
शील धर्म व्रत नेम खूंटड़ी सुन्दर ना हिल जाय ।

चितगतनी से बीस पेखड़ी चौकस बंद लगाय ॥ २
मन माल है नत्याग बावरी मत की नाय बनाय ।
तप तकला और दया दमड़का चरखा चित्त बनाय ।३
राम नाम की तार बांध ले सुरता मत गरभाय ।
शम्भुनाथ की नाव झीझरी सत्गुरु पार लंघाय ॥ ४

शब्द ३५

दो०-सहज ही धुन लाग रही, कहे कबीर घट मांह ।
हृदय हर २ होत है, मुख की हाजत नांह ॥

हर २ हर हो रही हिये में और बातां रे सब झूठी ।टेक
प्रेम घटा म्हारे सत्गुरु लाये अमृत बूंदां हद मीठो ।
तिरवेणी के रङ्ग महल में साधां लालां हद लूटी ॥१
रुणझुणा २ बाजे बाजैं जगमग झलक रही ज्योति ।
ओंकार के सोऽहंकार में हंसला चुग रहा निज मोती ॥
पांच चोर तेरी काया नगर में इनको पकरो ने शिरचोटी
पांचों को मार पचीसोंको वशकर जबजानूंगा तेरीबुध चोखी
सत् सुमरण का सेल बनाले ढाल बनाले धीरज को ।
काम क्रोध मन मार हटाले जब जानूंगा तेरी रजपूती ॥
पक्की घड़ी का तोल बनाले कारय न राखो एक रती ।
शरणमच्छंदर जति गोरख बोले अलख लखे सोइ खराजती

शब्द ६६

सो म्हारे साधो राम नाम धन खेती ॥ टेक
मन कर हरिया सुरत बरधिया ज्ञानध्यान दोउ जोती ।
ओ३म् नामको बीज जो बोया उपजी नव निध खेती ॥
ध्रू बोई प्रहलाद ने बोई उनकी हुई है अगेती ।
काम क्रोध के जो नर वश हैं उनकी पछत पछेती ॥
चोर न चोरे राजा न डांडे भेजन लगत टके की ।
इस खेती में बहुत नफा है कहियो संतन सेती ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर आन मिलो हित सेती ॥

शब्द ६७

सासरे में ना जाऊंगी मोय गुरु मिले रैदास । टेक
एक बेल के दो तूमरी एक ही उनकी जात ।
एक तो रुलती डोले गलिन में एक सतगुरू केहाथ ॥१
एक मिट्टी के दो हैं बर्तन एक ही उनकी जात ।
एक में घलते मक्खन मिश्री एक धोबी के घाट ॥ २॥
आधे गधों की पनहीं गांठे बैठयो खरे बजार ।
भूखों को तो भोजन देता आखिर है जात चमार ॥ ३॥
काख में से रापी काढ़ो चीरा अपना गात ।
चार युगों के दोखे जनेऊ आठ गांठ नव तार ॥४॥

अपने महल से मीरा उतरी घट ही में गंगा न्हाय ।
पां पूजूं इस रहदास के अमर लोक लिये जाय ॥५॥

शब्द ६८

सो राणा जी तैं जहर दियो म्हाने जानी ।टेक
भर २ दिये जहर के पियाले हू गयो अमृत पानी ॥ १॥
जब लग सोना कसिबे नांहीं होत न बाराबानी ॥२॥
सोय भरोसा श्यामसुन्दर का मेरी घटत न कानी ॥३॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर चरण कमल लिपटानी ॥४॥

शब्द ६९

पढ़ो रे भैया कृष्ण गोविन्द मुरार ।टेक
कहै प्रहलाद सुनो भाई बालक लीजो जन्म सुधार । १
को है हिरणाकुश अभिमानी जो सके तुमको मार॥२॥
राखन हारो और कोई है श्याम धरे भुज च्यार॥३॥
सूरदास प्रभु शरण तिहारो तुम सब के घर बार॥४॥

शब्द ७०

दो०—राम नाम को अंक है सब साधन है शून्य ।
अंक गये कछु है नहीं अंक रहे दशगून ॥
बसो जी म्हारे नयनन में सिया राम ॥टेक॥
जनक नन्दिनी जगत वन्दिनी रघुनायक घन श्याम।१।

सरजु के तीर अयोध्या नगरी चित्रकुट निज धाम ॥२
कनक मण्डप तले रतनसिंहासन युगल मूरति अभिराम
तुलसिदास प्रभुकी छबि निरख लजत कोटिशत काम ।

शब्द ७१

क्या तन मांजता रे आखिर माटी में मिल जाना ।टेक
माटी ओढ़न माटी पहरन माटी का सिरहाना ।
माटी का कलबूत बनाया जामे भवर समाना ॥ १ ॥
मात पिता का कहना मानो हर से ध्यान लगाना ।
सत्य बचन तुम निश दिन बोलो सबको सुख पहुंचाना ॥
इक दिन दुहले बने बराती शिर पर तुले निशाना ।
इक दिन जाय जङ्गल में सोवे कर सूधे पग ताना ॥
पढ़ना लिखना कभी न छोड़ो जो चाहो कल्याणा ।
सब के स्वामी पालन कर्त्ता उनका हुकुम बजाना ॥ ४ ॥

शब्द ७२

अवधो सो योगीगुरु मेरा जो इस पद का करे निवेरा ।
तरु वर एक मूल बिन ठाढा बिन फुले फल लागे ।
शाखा पत्र कछु नहीं वाके अष्ट कमल दल गाजे ॥१॥
चढ़ तरुवर दो पक्षी बोले एक गुरु एक चेला ।
चेला रहा जगत गुन खाया गुरु निरन्तर खेला ॥ २॥

शून्य शिखर पर गाय बियानी धरती छीर जमाया ।
माखन रहा सो सन्तन खाया छाछ जगत भरमाया ॥
पक्षी खोज मीन के मारग कहैं कबीर दो भारी ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम सूरति की बलिहारी ॥ ४॥

शब्द ७३

सुनो धर्म कर्तव्य मनुष्य का सर्व काल जो सुख दाई ।
सुनकर ग्रहण करे श्रद्धा से बने काम उस का भाई ॥
दुख में दुखी न होय भूल कर सुख में नहीं जो हर्षावे ।
हानि लाभ में रहे धीर चित्त जरा न मन में घबरावे ॥
क्षमा शील सन्तोष शान्ति कभी न मन से बिसरावे ।
विद्या विनय विवेक बुद्धि में बसे तो सुख सम्पत पावे ॥
रहे पवित्र शुद्ध तन मन से तजे कपट और कुटलाई ॥२॥
पर धन और पर नारि निरख कर मन ललचाना ना चाहिये,
अष्ट प्रकार त्याग मैथुन को ईश्वर गुण गाना चाहिये ॥
सत्य बात कहने सुनने में कभी न शर्माना चाहिये ।
दुष्ट संग से बचे सदा सत्संग में जाना चाहिये ।
करे अतिथि सत्कार वस्त्र भोजन से बड़ों की सेवकाई ३॥
करे धर्म से धन का संचय चाहे जो रोजगार करे ।
तन मन धन और वचन कर्म से एक का एक सुधार करे
कटु वचन ना कहे किसी से परहित पर उपकार करे ।

सत्य विद्या सोई सिखलावे सदा सत्य व्यवहार करे ॥
वेद शास्त्र से ऋषि मुनियों ने सुर पद रीति यह बतलाई ।४
मनुष्य मात्र का धर्म वेद में परमेश्वर ने बतलाया ।
यही आज संक्षेप रीति से लघु मति मैंने गाया ॥
करो करो करतव्य मनुष्य का मिले न फिर नर की काया ।
अवसर दुर्लभ वृथा जात है बड़े पुण्य से जो पाया ॥
खोल नयन सुख चैनहिये के अब तो चेतो चितलाई ॥५

शब्द ७४

दोहा०—धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय ॥
माली सींचे केवड़ा ऋतु आवे फल होय॥
रे भूले मन धीरी क्यों न धरे ।टेक॥
अजगर पड़ी धरण में लोटे वो भी पेट भरे।
अललपंख वो भारी योधा दिन भरभूख मरे ॥१॥
कबहुं बूंद गगन मेंदरसे कबहुं तलाब भरे ।
कबहूं पत्थर तिरते देखे लोढे डूब मरे ॥२॥
मंजारी सुत आठा में राखे शिर पे अग्न जरे।
खम्भफार हिरणाकुश मारे नृसिंह रूप धरे॥३॥
नरसी के प्रभु गिरधर नागर आकर भात भरे ॥

शब्द ७५

दोहा—घर में घर दिखलाय दे सो गुरु चतुर सुजान।

पांच शब्द सुनकर सुन्न वाले शब्द निशान ॥

सत्गुरु आवो हमारे गेह रे । टेक

सब कोई कहैं तुम्हारी नारी मोको अति सदेह रे ।

एक मेक होय सेज न सोवे तब लग कैसा सनेह रे । २

रात दिवस मोय नींद न आवे नयनन बरसे मेह रे ३

कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि चरणन से नेह रे ।

शब्द ७६

साधो अब ना लगेगा थारा दाव रे । टेक

जागत् असुर ये सोवत नाहीं तुम रे मन में बड़ा चाव रे ॥१

अब के लौट बगद् घर जावो फेर लौट तुम आवो रे॥१॥

रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके मनमें समझ समावो रे॥१

कहत कबीर सुनो भाइ साधो आवा गमन नसावो रे ॥१

शब्द ७७

पानी में मीन पियासी मोय सुन सुन आवे हांसी टेक

जल थल सागर पूर रहा है भटकत फिरे उदासी ॥ १ ॥

आतम ज्ञान बिना नर भटके कोई मथुरा कोई काशी ॥ २

गङ्गा जाय गोदावरी न्हानो भक्ति बिना सब नाशी॥ ३ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो सहज मिले अविनाशी॥ ४॥

शब्द ७८

दोहा- बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत ।

काल चिरैया चुग रही, निश दिन आयु खेत ॥
सुमरण कर श्री राम नाम, दिन नीके बीते जाते हैं
तज विषय भोग और सभी काम, तेरे संगना चलेसी एकदाम।
समझो इस को सुबह शाम जो देते हैं सो पाते हैं ॥१॥
कौन तुम्हारा कुटुम्बपरिवारा, किसकेहो यहांकौनतुम्हारा
किस के बल हरि नाम विसारा, सब जीते जी के नाते हैं।२।
लख चौरासी भरम के आया, बड़े भाग्य मानुष तन पाया।
ता पर भी नहीं करी कमाई, फिर पीछे पछताते हैं ॥३॥
जो तू लागे विषय विलासा, मूरख फंसे मौज की फांसा।
क्या देखे श्वासन की आशा, गये फेर नहीं आते हैं।४

शब्द ७९

रङ्गमहल के बीच पुरुष मतवाला है। टेक
उलटे प्राण गर्भ में डारे,
अलख पुरुष का खेल भरम से न्यारा है।
गगन मण्डल में अमी रस भरिया,
नुगरा प्यासा जाय हिये अन्धियारा है।
पांच आत्मा अपनी सारो नागन का फन उलटा मारो,
मेरु दण्ड को शोध पवन दुधारा हैं।

शब्द ८०

मेरी चुनरी के लाग्यो दाग पिया। टेक

धोवत फिरूं दाग नहीं छूटे मन मूरख अभिमान किया ।१
महंगे मोल की मेरी आई जुनरियां तन मन धन कुर्बान किया।
सत्गुरु धोबिया मिले सहज में दाग जिगर का साफ किया
जग मग जग मग करे चुनरिया कोटिभानु प्रकाश किया।

शब्द ७१

जुगलिया चाम की जामे बोले रमता राम। टेक
चाम ही का ऊंटड़ा चाम का नक्कारा ।
चाम ऊपर चाम बैठा चाम बजावन हारा ।।१।।
चाम ही की गावड़ी चाम ही का बछड़ा ।
चाम नीचे चाम ऊचे चाम दुहावन हारा ।।२।।
चाम की धर्तली चाम ही का आकाश ।
चामही के नौलख तारे जिनमें है प्रकाश ।।३।।
कहैं रहदास सुनो भाई साधो कौन चाम से न्यारा
जो इस चाम से न्यारा कहिये सोही गुरु हमारा ।।४।।

शब्द ७२

तुम को मेरी लाज रघुवर । टेक
सदा २ मैं शरण तुम्हारी तुम हो गरीब नवाज़ ।।१।।
पतित उधारण विरद तिहारो श्रवण सुनो हो अवाज़ ।२
हो तो पतित पुरातन कहियो पार उतारो जहाज़ ।।३।।

अघ खंडन दुख भंजन जन के यही तिहारो कोज ।।४।।
तुलसीदास पर किरपा करीयो भक्ति दान दो आज ।५।

शब्द ८३

तुम पलक उघारो दीनानाथ, मैं हजिर नाजिर कब की खड़ी
साख सो तो दुश्मन हो गये लागूं कड़ी कड़ी ।
तुम बिन मेरा कोई नहीं है तुम बिन नैया मेरी अटक रही
तन की हूख बदन में लागे सूकूं खड़ी खड़ी ।
पल २ होगई वर्ष बराबर मुश्किल होरही मैंने घड़ी घड़ी
हार हमेल सभी सुख त्यागे मोतियन तजी लड़ी ।
ज्ञानवाण हिरदे में लाग्या प्रेम कटारी हिय रहक रही
किया करम मेरे सन्मुख होगया धुरकी कलम अड़ी ॥
बार बार मीरां बाई गावे,

शब्द ८४

धन हो साहिब मैंने आजकी घड़ी ॥ ४ ॥
दोहा–साहेब से सब होत होत है बंदे से कुछ नांह ।
राई ते पर्वत करे पर्वत राई मांह ॥
साधो राम करे सोई होय रे । टेक
घरवा पछवा पवन चलत हैं असुर रह्यो है सोयरे ॥ १॥
तोरो या गढ़ को भीतर आवो बंधी धरी हैं दोयरे ॥२

सब जग अपने धन्धे में लागे तुम्हें न देखे कोयरे ॥३
कहैं कबीर सुनो भाई साधो लखे निरन्तर कोयरे ॥४

शब्द ८५

हरी भज २ जन्म सुधर जाय कर्म कोट की कटे फांसी टेक
तीरथ बरत धरम सब मनके क्या मथुरा भाई क्या काशी।
भटक फिरे खाली रह जायगा अन्त समय यमकी हो फांसी
प्रेम दिपक और तेल गरीबी श्रुति की बाती लाखाशी ।
ज्ञान चांदना हुआ मन्दर में दरस्यो पूरण अविनाशी ।२
पूरण ब्रह्म सकल घट वासी क्या जोगी क्या सन्यासी ।
घर बाहिर अरु है दर दर में सांचा साहिब अविनाशी ।
साध संत मिल सौदा करले भक्ति भाव का है हांसी ।
घीसा संत शरण सत्गुरु की अगम महल के हैं वासी ।४

शब्द ८६

दोहा – ऊंचा तरवर गगन फल विरला पक्षी खाय ।
इस फल को तो वो चखे जीवत ही मर जाय । १
जब लग आश शरीर की निर्भय भया न जाय ॥२
काया माया मन तजे चौड़े रहै बजाय ॥ २
कबीरा प्रेम रस जिन पिया, अंतरगत लौ लाय ।
रोम रोम में रम रहा और अमल क्या खाय ।

शब्द ८७

कोई पीवो रामरस प्यासा रे । टेक
गगन मंडल में अमृत बरसे पीलो सांसम सांसा रे ।
ऐसा महंगा कभी बिकत है छै रति बारह मांसा रे
जो पीवे सो जुग जुग जीवे कबहुं न होत विनाशा रे ॥
इस रस कारण हुए नृप जोगी छोड़े भोगविलासा रे ।
गोपीचन्द भर्थरी रसिया और कबीर रहदासा रे ।
गुरुदादू प्रसाद कछु उनके पीयो सुन्दरदासा रे ॥

शब्द ८८

दोहा– मोमें तोमें सर्व में जित देखूं तितराम ।
राम बिना सब एक ही सरे न एकहु काम ॥
घट घट में पक्षी है बोलता । टेक
आप ही डंडी आप तराजू आप ही बैठा है तोलता ।१
आप ही माली आप बगीचा आप ही कलियां है तोड़ता
सब में सब घन आप विराजे जड़ चेतनमें है डोलता ३
कहत कबीर सुनो भाई साधो मन की घुंडी है खोलता

शब्द ८९

मेरे सैंयां शिगर गये मैं ना लड़ी थी ।टेक
इस कायाके दश दरवाजे

ना जानूं, कौनसी खिड़की खुली थी।। १
पाँच जिठनियाँ दश दौरानियां,
नाजानूं इन में से कौनसी लड़ी थी ।। २
ना मैं बोली ना मैं चाली,
ओढ़े दुपट्टा सोई पड़ी थी ।। ३ ।
कहैं कमाली कबीर की बाली,
इस ब्याही से मैं क्वारी भली थी ।। ४ ।।

शब्द ९०

छोड़ो लंगर मोरी बैयाँ गहोना । टेक
मैं तो नार पराये घर की मेरे भरोसे गोपाल रहो ना
जो तुम मेरी बैंया गहत हो,
नयना मिला मेरे प्राण हरोना ।। २ ।।
बृन्दाबनकी कुंजगलिन में,
रीत छोड़ अनरीत करो ना । ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
चरण कमल चित टारो टरैना ।। ४

शब्द ९१

कछु लेना न देना मगन रहना । टेक
पांच तत्व का बना पींजरा जामे बोलै है मेरी मैना ।। १।।

गहरी नदिया नाव पुरानी खेवटिया से मिले रहना ॥
तेरो पिया तेरे घट में बसत है सखी खोज कर देखो नैना ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु के चरण में लिपट रहना ॥

शब्द ९२

दोहा—ज्यों एक ही शिला मध्यप्रतिमा विविध प्रकार ॥
कहैं कबीर त्योंही बसे ब्रह्म मध्य संसार ॥

अजि एजि साधो एक रूप सब माहीं ।
दूजा कर्म धर्म है कल्पित ज्यों दर्पण पर छाईं ॥ टेक
जल तरङ्ग ज्यों जल से उपजे फिर जल माहिं रहाईं ।
काया काया पांचतत्व की विनशे कहा बताईं ॥ १ ॥
वही ब्रह्मा वही विष्णु महादेव सब देवनपति साईं ।
रूपों में सब रूप धरे है बिन गुरु दरशे नाहीं ॥ २ ॥
घट में बसे लखे कोई थोरा माया जाल भ्रमाईं ।
जब सतगुरु की किरपा होवे भेद भाव मिट जाईं ॥ ३
सब जीवन संग वैर छोड़ मत निन्दा करे पराईं ।
कहत कबीर जगत सब मिथ्या ज्यों सपना रहे नाहीं ॥

शब्द ९३

दोहा—पावक रूपी राम है, घट घट रहा समाय ।
चित चकमक लागे नहीं, धूंवा ह्वै रहजाय ॥

म्हारे प्रेम विरह के बाण लगेंगे काहू हरिजन के ॥ टेक
माया वश होरहा अज्ञानी जिनके सतगुरु लगे नहीं कानो
धुकड़ धुकड़ रह जाय हथौड़ा जैसे घन के ॥ म्हारे० ।
धन संपति में फिरत भुलाया गुरु का शब्द नहीं चितलाया
अन्त समय पछताय नर्क में जब लटके ॥ २ ॥ म्हारे०
विरही की तो विरही जाने बेदर्दी नहीं पीड़ पिछाने
फटा कलेजा जाय बींध गया सब तन के ॥ ३ म्हारे०
जो दीखे सो रूप हमारा अलख लखे सोही लखने हारा
रूम रूम के बीच एक हुआ हरि चमके ॥ ४ ॥ म्हारे०
शुद्ध सच्चिदानन्द समाया ओंकार अब ध्यान लगाया ।
परमानन्द प्रकाश हुआ गया भ्रम नसके ॥ म्हारे०

शब्द ९४

दोहा-जमी खिलौना खांड मध्य खांड खिलौने मांह ।
तैसे सब जग ब्रह्म में ब्रह्म जगत के मांह ॥
सब महलों में दर्श महल में प्यारा है । टेक
मूल कमल पद चित्र बखानो कलंक चाप लाल रङ्ग मानो
देव गणेश तहां रोपा ठानो ऋद्धि सिद्धि चंवर ढुलारा है
स्वाद चक्र षट् दल विस्तारो ब्रह्मा सावित्री रूप निहारो
उलट नागिनी का सिर मारो तहां शब्द ओ३म् कारा है
नाभी अष्टकमल दल राजा श्वेत सिंहासन विष्णु विराजे

रिद्धि आप ताहु सुत बाला लखो शिव आधारा है
द्वादश कमल हृदय के मांही जनक गुरु शिव ध्यान लगाहीं
सोहं शब्द तहाँ धुनि छाई गण करें जय जय कारा है ॥
दो दल कमल कण्ठ के मांहीं ता मध्य बसे अविद्या माई
हरी हर ब्रह्मा चंवर दुलाई जहां श्रीं नाम उचारा है
तापर कंज कमल है भाई बक भौंरा दो रूप दिखाई ।
निज मन करो जहां ठकुराई सो नयनन पिछवारा है ॥
कमलन भेद कहा निरवारा यह रचना सब पिण्ड मंझारा
सत सद्गुरु कर गुरु शिर धारा वहां सत्य नाम उचारा है ॥

शब्द ६५

दोहा-घंटा धड़के सुन्न में बाजे अनहद तूर ।
तकिया है मैदान में पहुंचेगा कोई ॥

गगन मण्डल में जो जन आकर सुने बेहद अनहद बानी ।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी॥टेक॥
श्याम पुतलियो बदल आंख की रूप रंग देखो सारे ।
सप्त ऋषियों न सात घाट पर भिन्न २ आसन मारे॥
जिस में धामा सहस्त्र कमल का तीन लोक यहां विस्तारे
बनिता सविता देव सदन के सूक्ष्म रूप सातों धारे ॥
घूंघूं घुंघुरा झांझ सनक की घंटा शंख बजें न्यारे ।
धुन ओंकार गगन में झिलमिल ज्योति भरें नौलख तारे

पाँच कमल के बीच कुण्डलिनी सहस २ ही फुंकारे ।
मेरुदण्ड से सीधा होकर तोड़ दिये नभ के तारे ॥
तीन लोक की रचना यहां से भई सुरति यहां दीवानी ।
सातों रङ्ग निरखता यहांपर होजावे पूरण ज्ञानी ॥१
दर्शन यहां तिरलोक पती के पावो मन में हर्षावो ।
सूची अग्र छिद्र में होकर बंक नाल में घुस जावो ॥
तिरछा मारग बंक नाल का बिन सत्गुरु कुछ नहिं पावै
ऊंचा नीचा ऊंचा होकर त्रय मण्डल पर चढ़ जावो ॥
प्रत्याहार धारणा धारो सिमट बीच सुखमन आवो ।
पीपी पपीहा ऊपर बोल्यो कूर्म बन कर छिप जावो ।
और मरे सब जग का मरना तुम जीते जी मर जावो
भृङ्गी गुरु का शब्द सुनो तुम चरण गुरू के चित लावो ॥
तन मन सौंपो अपना उनको हो जावो सर्वस्व दानी ।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावो पूरण ज्ञानी ॥२
यह ब्रह्माण्ड फोड़ अण्डे से त्रिकुटी का मण्डल साजा
योजन लक्ष लक्ष का घेरा सरे जीव का सुख काजा ।
हास्य विलास यहां पर अद्भुत ओ३म् ओ३म् हूहू बाजा
रस का उठे सरूर यहां पर अनहद का बादल गाजा ।
ज्ञान विज्ञान हुए यहां से अब मोह जाल टूटा ताना ॥
गङ्गा यमुना और सरस्वती इनके भीतर तू आजा ।

अमृत रस में न्हा कर यहां पर विश्वनाथ दर्शन पाकर
योजन कोटि सुरत फिर जाकर दशों शून्य में मग जानी
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥३॥
द्वादश गुण प्रकाश यहां का त्रिकुटी से शून्य में आई ।
रूपवंत देवों से मिल कर सिंधु सरोवर जा न्हाई ॥
महा शून्य की छवि को कोई कहो सके कैसे गाई ।
मान सरोवर अमृत धारा आनन्द की नदियां पाई ॥
स्वरंगी सितार बजे हैं गाजे श्रुति शब्द में ठहराई ।
बसु मरुत वहां बास करें हैं कहा कहूं सुन्दरताई ॥
अग्नि चन्द्र समान मुखों से मंद मंद ही मुसकाई ।
आयु षोड़श वर्ष सघन की ऐसी ही अबला पाई ॥
सूर्य कान्त की भूमि बनी वहां अमृत रस बरसे पानी।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥४॥
रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके उठे प्रेम की लहर घनी
बाग़ बग़ीचे अमर फलों के लालों की वहां सड़क बनी ॥
अमी सरोवर बाग़ बाग़ में तट उनका पारस की मनी ।
कैसे शोभा कहूं यहां की सब कुछ जाने आप धनी ॥
स्वयं प्रकाश रूप को लेकर सुरति फिर आगे को चली
योजन अरब गई ऊपर को आगे मिल गइ प्रेम गली ।
दशों दिशा में घोर अंधेरा मगन भई नहीं छली बली ॥

पीतम सरव गई नीचे की यहां से देखी सैर मही ।
इस पद में दस नील अंधेरा यहां से सुरति उलटानी ।
सातों रङ्ग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥
पीतम सवर गई नीचे को पाइ यहां की नहीं पाई ।
पर सतगुरु का ध्यान सुरतिया उलट गगन पर चढ़ी आई ।
महा शून्य से आगे आकर सिता ऽसिता नदियां छाई ॥
महकल चारि पुरुष दर देखा भंवर गुफा झूली आई ॥
एक हिंडोला, यहां पर अद्भुत झूल रहे मुनीवर राई
इड़ा पिङ्गला रज्जु करके सुषमन की पटली लाई ॥
कुंडली कालकूर यत्र रोंधा पौन गगन झोंका खाई ।
पारा पशपति और मध्यमा सखियों ने वाणी गाई ॥
अनहद घोर घटा धिन बंसीबरसे मधुरी मन भानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥

गोपी मधुरी वाणी गावैं बन्शी बजावैं नन्द कुमार ।
एक एक गोपी संग मिल कर सोऽहं स ऽहं रहे उचार
हियरा से हियरा मिलि बैठे आनन्द को कोकरें सुमार !
और देव की गम नहीं यहां पर महादेव रह मन में धार
गोपी बन कर मिले गले से चरणों से गल बैयां डार
एक हो गये स्वयं रूप में नयनों से नयनों की धार ॥
गङ्गा यमुना अचल हो गई ऐसा अद्भुत कियो विहार

शब्द सांध्य हुआ एक हो गये ताड़ी लागी अगम अपार
नाका टूटा सत्य लोक का सड़ गये हंसा ढैलानी
सातों रङ्ग निरखले यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥७॥
ज्योति हंस यहां वास करें हैं सूक्ष्म चैतन्यही दर्शाया।
जड़ स्थूल नहीं है यहां नहींपर यहां पर काया माया ॥
प्रेम दिवानी हुई यहां पर सत्य २ आपा पाया।
शब्द २ धुनि सुनके शोम को फिर आपे में मगनाया ॥
रूप स्वरूपा नदिया यहां पर सोना रूपो झलकाया।
वन उपवन है यहां पे अद्भुत कोटो चार इनकी छाया ॥
कोटिन सूरज चांद समाना पहुप दल पर लगि छाया।
परम हंस यहां वास करें है एक भुशुंड काग पाया ॥
रस बस के सीकारे यहां पर हंस करैं मधुरी वानी।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥८॥
सत्य पुरुष का दर्शन कीया क्या बरणों सुन्दरताई।
कोटिन सूर्य्य चांद देख लो एक रोम से शर्माई ॥
पद्म त्रिलोक बराबर उनकी खिली खेल सुख को पाई।
आकर सोई पिया संग अपने सुध बुध अपनी बिसराई।
संत कहैं अब अलख लोक की महिमा और उत्तम ताई।
अरबन खरबन ज्योति चमके कोट शंख जो झलकाई ॥
अगम लोक की गम नहीं मुझको गूंगे ने मिसरी खाई।

परमानंद गुरु चरणों पर कोट कोट ही बल जाई ॥
गुरु मिला आपा जब मेटा श्रुति शब्द में मगनामी ।
चारों रङ्ग निरखता यहाँ पर हो जावे पूरण खामी ॥८॥

शब्द ९६

दोहा—लग्न लग्न सभी कहैं लग्न कहावे सोय ।
नारायण जा लग्न में तन मन दीजे खोय ।
लग्न बिन जागे ना निर्मोही ॥टेक॥
बिना लग्न की प्रीति बावरे ओस नीर क्यों धोई ॥१
इयतो रहते राम भरोसे रजा करे सोई होई ॥२॥
बिन कृपा सत गुरु नहीं पावे लाख जतन करो कोई ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु बिनमुक्ति न होई ॥

शब्द ९७

दोहा— माला जपूं न कर जपूं मुख से कहूं न राम
मन मेरा सुमरण करे कर पाया बिसराम ॥
हर दमतसबी ने फेर भाई तेरे अन्दर अमोला लाल ॥ टेक
बिन तागे यह तन की पोई बिना सार का बीज ।
अंदर सुमरणी एक न फेरीरहा काट पे रीझ ॥ १ ॥
मरना जिकर मिटे सब तेरा मर के तेरा बीच ।
साच दुहाई तैंने तेरा सतगुरु कीतेरे में तेरापीव ॥ २ ॥

एक हजार छैंगो मे खीचरे चांद सूरज के बीच।
की दरवाजे बंध कर राखे दश में दसे नग दोय ॥४॥
पहले आपा खोजिये फिर मुंडाइये मूंड ॥
इधर उधर को क्या ढूंढे है इसी ढूंढ में ढूंढ ॥ ५ ॥
मौजी साध बंदगी वाको जिन गुरु दियो उपदेश।
कल्लर स्याह ने सैन लखाई दिल अन्दर दरवेश ॥१

शब्द ९८

अगम नहीं गुरु बिन सूझ पड़े ॥ टेक ॥
चार वेद पढ़े पुराण अठारा नौघट खोज मरे ॥ १ ॥
ज्ञान बिना भरम नाहीं छूटा झूठा ही वाद करे
कह गुरु शब्द आकाश बांस पर श्रुति चमन चढ़े ॥ ३
तन बिराड जीव तरे तुलसी सहज ही भवतरे ॥ ३

शब्द ९९

दोहा–लोहा जैसे काठ संग, चलत फिरत जल मांह।
बड़े न डूबत देत हैं जाको पकरे बांह ॥
संगत तो करले साध की जासे उपजेंगे अलख ज्ञान।
जल देखे शुची ऊपजे साधु देखे ज्ञान ॥
माया देखे लोभ ऊपजे तिरीया देखे काम ॥ १ ॥
साधु मिलन जब चालिये तज माया अभिमान।

ज्यों २ पग आगे धरे त्यों २ यज्ञ समान ॥ २
साधु हमारी आत्मा हम संतन की देह ।
रोम रोम में रम रहा ज्यों बादल में मेह ॥ ३
साधु माई बाप हैं साधु भाई और बन्धु ।
साधु मिलावे राम से काटें यम के फन्द ॥ ४ ॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी से भी आध ।
तुलसी संगत साधु की हरै कोट अपराध ॥ ५

शब्द १००

दोहा–बैठ कुसंग चाहत कुशल तुलसी बड़ो अफसोस ।
महिमा घटी समुद्र की, रावण बसो पड़ोस ॥
तजो रे मन हरि विमुखन को संग ॥ टेक
जाके संग से दुर्मति उपजत है पड़त भजन में भंग ॥
क्या होत काग कपूर चुगाये श्वान नुहावत गंग ॥२॥
क्या होत पय पान कराये विष नहीं तजत भुजंग ॥३॥
चन्दन लेपन वर्षण कीये मर्कट भूषण अंग ॥४॥
सूरदास यह काली कंवरिया चढ़े न दूजो रंग ॥५॥

शब्द १०१

दोहा–तुलसी रसना तो भली जो तू सुमरे राम ॥
नातर काट बनाइये मुख में भलो न चाम ॥१॥

हर भजले रसना (जिह्वा) नाम को ॥टेक॥
राम भजन बिन कौन काम को आखिर जिह्वा तू है।
चाम को, खेचूं तो नांइ छदाम को ॥१॥
ना तीर्थ न देव धाम को नित सूंगी गोबिन्द नाम को
निन्दक तू है सारे ग्राम को ॥२॥
बहु स्वादन मेवा बदाम को उदर बहुरि लाफलाम को
जैसे घोड़ी बिन लगाम को ॥३॥
शंभू सखी मैं चेरी श्याम को रहता यारहु आठों यामको
बता बकबो निज धाम को ॥४॥

शब्द १०२

दोहा–घट में रहे सूझे नहीं करसे गहा न जाय।
मिला रहे अरु ना मिले तासु कहा कहाय॥
एक अनेक व्यापक पूरक जित देखूं तित सोई ॥टेक॥
माया चित्र विचित्र बिमोहित बिरला बूझत कोई॥१॥
सब गोविंद हैं सब गोविंद हैं गोविंद बिन नहीं कोई॥२॥
सूत एक मणि सहस्र जैसे ओत प्रोत प्रभु सोई॥३॥
जल तरंग और फेन बुद्बुदा जल से भिन्न न होई ॥४॥
यह प्रपंच पार ब्रह्म की लीला विचरत आन न कोई॥५॥
मिथ्या भ्रम और स्वप्न मनोरथ सत्य पदार्थ माना॥६॥
छूटत ममता गुरु उपदेशी जाग्रत ही मन जाना ॥७॥

कहत नामदेव हरि की रचना देखो हृदय विचारी।८।
घट २ अन्तर सर्व निरन्तर केवल एक मुरारी ॥ ९ ॥

शब्द १०६

दोहा–मोहनी मूरत श्याम की हृदय रही समाय।
लाली महँदी पात ज्यों देख लखी न जाय॥
दुलाली लालन की म्हारे सतगुरु दई है बताय ॥टेक॥
लाल पड़ा मैदान में कीच रहा लिपटाय।
निगुरे निगुरे लखगये सुगरे लिया उठाय॥१॥
सब के पल्ले लाल है सब ही साहूकार।
गाँठ खोल परखा नहीं रे इस विध रहा कंगाल।२॥
इधर से अंधा आवता उधर से अंधा जाय।
अंधे से अंधा मिला मार्ग कौन बताय ॥३
लाली लाली सभी कहैं लाली लखी न कोय।
लाली लखी कबीर ने मुक्ति पाई सोय ॥ ४ ।

शब्द १०७

दोहा-कबीरा सुन्दरी यों कहे, सुनियो कन्त सुजान
बेग मिलो तुम आय के, ना तर तजूं प्राण।
पिया बिनसूनो छै म्हारो देश ॥ टेक ॥
ऐसा है कोई पीये से मिलावे तन मन धन करूं पेश ।१

थारे कारण बन बन डोलूं कर जोगिन का भेष ।२ ।।
प्रीतम प्यारे दरश दिखाजा तुम बिन बहुत क्लेश । ३
अवधि बदी थी अजहुं न आये रूपा होगये केश ।४।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर तज दिया नगर नरेश ।।५।।

शब्द १०८

दोहा–भली भई जो गुरु मिले, नातर होती हान ।
दीपक ज्योति पतंग ज्यों, परता आय निदान ।।
वा घर की सुध कोइ न बतावे जा घरसे जीव आया हो
ब्रह्मा विष्णु महेश नहीं थे किसने जीव बनाया हो ।।१।
पानी पवनको दही जमाया अग्निको जामनदीना हो २
चांद सूरज दो बने अहीरा मथ के माखन काढ़ा हो ।३।
रे मनसा माया का लोभी तुझे बार २ समझाया हो ।४।
कहत कबीर सुनो भाई साधो वाह घर गुरुने लखाया हो

शब्द १०९

दोहा–पपीहा प्रण कबहुं न तजे, तजे तो मन बे काज
तन छूटे तो कुछ नहीं, प्रण छूटे तो लाज ।।
आज जो मैं हरि है न शस्त्र गहाऊं ।
तो लाजूं गंगा जननी को शांतनु सुत न कहाऊं ।।टेक।
स्यन्दन खंड सारथी खंडु कपीध्वज सहित गिराऊं ।।१।।

पांडु दल सन्मुख ठहेधाऊं सरिता रुधिर बहाऊं ॥२॥
इतनी न करूं शपथ मोहे हर की क्षत्री गती नहीं पाऊं ।३
सूर श्याम रण भूमी विजय बिन जीवित न पीठ दिखाऊं

शब्द ११०

दोहा-भूले थे संसार में, माया के संग आय ।
सतगुरु राह बताइयां, फिर मिलेंगे आय ॥
माया है रंग बादली जामें चन्दा हो दरशे नांह ।टेक
काया में माया बसे ज्यों पत्थर में आग ।
जो तेरी सुरता हरि मिलनकी चकमक होकर लाग ॥१।
चोर चुराई तूम्बरो जल में डूबे नांह ।
वो डूबो वे वह उबरे करनी छानी नांह ।।माया २।
काम क्रोध के बने दरवा गर्ज रहा अहंकार ।
आशा तृष्णा खेवें बीजली भीजरहा संसार ।३॥
ज्ञान पवन जब से चली सब बादल दिये उड़ाय ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो चन्दा हो दर्शे आय ॥४॥

शब्द १११

दोहा-श्वासों की कर सुमरनी अजपाको कर जाप ।
ब्रह्म तत्व का ध्यान धर, सो ऽहं आपे आप ॥
अजपा जाप जपो भाई साधो श्वासों की करलो माला

मोरे राम ॥ टेक ॥

हाथसुमरनी बगल कतरनी यह क्या रचदियो चाला ।
लोगोंके भावँभगती कमावे साहेबकेमुख काला । मोरेराम
जब लग दरशे ना सच्चा साईं होवे ना घट उजियाला ।
बिन सतगुरु ताली नहीं लागे खुले न भ्रम का तालार ॥
मन का मनिया फेर प्राणी क्यों हो रहा मतवाला ।
गठड़ी खोल लाल नहीं परखा इस बिध आयादिवाला
साध सन्त की सेवा कीजे सन्तों का देश निराला ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो निर्गुणपीलो प्याला ॥ ४

शब्द ११२

दोहा-पपीहा प्रण कबहुं न तजे तजे तो तन बे काज
तन छूटे तो कुछ नहीं प्रण छूटे तो लाज ॥
अजि ऐजी साधो सहज समाधी भली ।
गुरु प्रताप भयो जा दिन से श्रुत अनन्त चली ॥ टेक ॥
आंखन मूंदू कानन रूंधूं काया कष्ट न धरूं ।
खुले नयन मैं हंस हंस देखूं सुन्दर रूप निहारूं ॥१॥
कहूं सो नाम सुनूं सो सुमरण खाऊं पिऊ सो पूजा ।
यह उद्यान एक सम जानो भावमिटाया दूजा ॥२॥
जहां जहां जाऊं सो परिकरमा जो कुछ करु सो सेवा ।

अब सोऊं तो कहूं दण्डवत पूजूं और न देवा ॥३॥
कहै कबीर यह उनमन रहनी सो प्रगट कर गाई ।
सुख दुख से इक परे प्रेम सुख जेहो सुख रहा समाई ॥

शब्द ११३

तनक हरी चितवो मेरी ओर ॥टेक॥
खड़ी खड़ी मैं अरज करत हूं अर्ज करत भई भोर ॥१॥
तुम से हम को नाहीं मिलेंगे हमसी लाख करोर ॥२॥
बन माहीं व्याकुल भई डोलूं ढूंढ़ फिरी चहुं ओर ॥३॥
मीरां के प्रभु कब जो मिलोगे सुन्दर प्रीतम मोर ॥४॥

शब्द ११४

चल गगन मण्डल के बीच जहां तेरा पिया सजनी ॥टेक
यहां एक आवे एक जाय वाके संग क्यों न चली ॥१॥
जहां झिलमिल २ होय खिल रही चम्पा की कली॥२॥
तुम चढो छमाछम जाय पिया की सुखमन सेज बिछी ३
मिल एक रूप होजाय दुई सब तुरत नसी ॥४॥
यों कहते नाथ गुलाब मुकत की यही है गली ॥५॥
गुण गांवे भानीनाथ पिया से जाकर मिली ॥६॥

शब्द ११५

चले गये दिल के दामन गीर ॥टेक॥

जब सुध आवे तुमरे दरश की उठें कलेजे पीर ॥१॥
नट वर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥२॥
वृन्दाबन वंशीवट त्यागो निर्मल जमना नीर ॥३॥
आप ही जाय द्वारका छाई खारी नद के तीर ॥४॥
सब गोपीयन का नेह बिसारो ऐसे भये बेपीर ॥५॥
सूरदास ललिता उठ बोली आखिर जात अहिर ॥६॥

शब्द ११६

दोहा-राजा राना राव रंक बड़ा जो सुमरे नाम ।
कहे कबीर सब में बड़ा जो सुमरे निष्काम ॥

तू सुमरण करले मेरे मना तेरी बीती,
जात उमर हरि नाम बिना,
पंखी पंख बिन हस्ती दन्त बिन नारी पुरुष बिना ।
जैसे पंडित वेद विहीना तैसे प्राणी हरी नाम बिना ॥१॥
देह नयन बिन रैन चन्द्र बिन धरणी मेघ बिना ।
जैसे पुत्र पिता बिन हीना तैसे प्राणी हरि नाम बिना॥२॥
कूप नीर बिन धनुष वीर बिन मंदिर दीपक बिना ।
जैसे हृदय ज्ञान विहीना तैसे प्राणी हरीनाम बिना।३
काम क्रोध मद लोभ निवारो त्यागो मोह तुम सन्त जना।
कहें नानक सुनो भगवन्ता या जग में नहीं कोई अपना

शब्द ११७

दोहा–जो ऊगे सो आथवे, फूले सो कुमलाय ।
जो चिनिये सो ढै पड़े, जामें सो मर जाय ॥

चरखा हालन लागा सारा तैंने कैसो खराद उतारा ।
कारीगर जहां घड़ने बैठा वहां घोर अंधियारा ।
वे औजार साल सब कीने मंजा ठीक समारा ।।१।।
नौ दस मास में घड़ कर देता ना कुछ चेत विचारा ।
बहत्तर जिसमें ठोकी कठरी बोच रखा गलियारा ।।२।।
ठोक ठाक तियार किया जब पृथ्वी बीच उतार ।
चरखे वाली के मन भाया सब को लागा प्यारा ॥३॥
अन्त समय चरखे को आई आया हुकम करारा ।
माधोदास कहत कर जोरा होगया न्यार न्यारा ।।४।।
एक शब्द गुरु देव का जाका अनन्त विचारा ।
पंडित और मुनिजन थके वेदन पाया पार ।

शब्द ११८

दोहा–एक शब्द गुरु देव का जाका अनन्त विचार।
पंडित थाके मुनि जना वेद न पावे पार ॥

सुनो भाई साधो अधर पद का विचार ॥टेक॥
नित्य शुद्ध शिव रूप निरंजन निर्विकल्प निश्चय भवभंजन

अजर अमर अज निर्गुण निर्मल निर्विशेष निराधार ।१
विभु अनन्त अद्वैत अविनाशी पुरुषोत्तम स्वतन्त्र ईश्वरासी
स्वयं प्रकाश असंग अनादि निष्क्रिय और निराकार ।२
पूरण ब्रह्म सन्तं अनूपा अप्रमेय अव्यक्त अनूपा ।
निर्विकार निरवयव सनातन अगम अखण्ड अपार ॥३॥

शब्द ११९

दोहा–कबीरा करनी आपनी, कबहुं न निष्फल जाय ।
सात समुद्र आड़े पड़ै, मिले अगाऊ आय ॥

कर ले मन मेरा जो कुछ करना होय ॥ टेक
काल करे सो आज कर जो कुछ करना होय ।
अवसर चूके मौसर नाहीं पीछे झुरना होय ॥
क्या तू फिरे मग्न मन अपने अंगल हिरना होय ।
भवर फंसा चौकड़ी सारी भूला ही भरना होय ॥२
जोबन ओस ओस का मोती एक दिन ढलना होय ।
अपनी चलती बुरा न करिये सब दिन डरना होय ॥३
मौत निमानी खड़ी शीश पर एक दिन मरना होय ।
आंख रहा वर्षों के सामे पलकी खबर नहीं तोय ॥ ४
करले ना मन नाव राम की सतगुरु शरना होय ॥ ५ ।

शब्द १२०

सब तज भज हरि नाम प्यारे ॥ टेक

दीन दयाल कृपाल दयानिधि भक्तन के रखवारे । १
पापी पतित गीध गनका से कोटिक जन निस्तारे ।२
जहां २ भीड़ पड़ी भक्तन पर तुरत हि आप पधारे ।३
रावण कुम्भकरण से योधा महा युद्ध कर मारे ॥४

शब्द १२१

सुरता हे म्हारी धोबनिया म्हारा दाग़ जिगरका धोय ।
तनकर कूंडी मति मसाला या ही में सीख करो ।
क्रोध लकरिया ठोक जराओ कुन्दी तो खूब करो ।१
समता नीर ज्ञान का साबुन सत का भावा दो ।
शील शिला पर दे फटकारो या विधि साफ करो ।२
खैंच तान कर तह बनालो गुलझिट मत राखो ।
जन्म २ के दाग़ लगे हैं अब के तो हारो याने धोय ।४

शब्द १२२

मालिक कुल आलम के हो, तुम सच्चे श्रीभगवान ।टेक
सूरज चांद पवन और पानी, धरती बीच असमान ।
सब में जलवा तेरा ही देख्यो, कुदरत पर कुरबान ।१
भारत में अर्जुन के कारण, आप बने रथवान ।
उसने अपने कुल को देखा छुट गये तीर कमान ॥२॥
ना कोई मारे ना कोई मरता, तेरा ही अज्ञान ।

आतम एक अचल अविनाशी, यह गीता को ज्ञान ॥३॥
मुझ अजिज पर कृपा कीजयो, बन्दा अपना जान।
मीरां माधो शरण तुम्हारी, लगा चरण से ध्यान ॥४॥

शब्द १२३

भोर भयो पक्षी गण बोले उठो अब हरीगुण गाओरे ॥१
लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बार बार हर्षाओ रे।
प्रभु की दया सुमिर निज मन में, सरल स्वभाव उपजाओ रे
हो कृतज्ञ प्रेम में उनके, नैनन नीर बहाओ रे ॥४॥
ब्रह्म रूप सागर में मन को, बारम्बार डुबाओ रे ॥५॥
निर्मल शीतल लहरें लेले, आत्म ताप बुझाओ रे ॥६॥

शब्द १२४

नाथ कैसे छोड़ बैठे क्या मेरी तकसीर है।
को बैठूंगी प्राण अपने ऐसी मुझ पै भीड़ है।
ऐसो थो मैं प्राण प्यारी कैद रावण के पड़ी।
राक्षसी डरपा रही हैं ले हाथ में शमशीर है ॥
छुट गई संग की सहेली छुटा सब परिवार है।
छुट गई चरणों की भक्ति लोट गई तकदीर है ॥
रात दिन तड़फूं पड़ी तुमरे दरश बिन हे पती।
तुमरे आये बिन हमारी कौन बांधावे धीर है।

मुझ को सताते हैं निशाचार अब मेरी सुध लीजिये।
दास तुलसी शरण तुमरी जन की मेटी पीर है॥

शब्द १२५

मन पछते हैं अवसर बीते॥ टेक॥
दुर्लभ देह पाय हरि भज कर्म वचन और होते।
साहस बाहु दश बदन आदि नृप बचे न काल बलीते।
हम हम कर धन धाम संवारे, अंत चले उठ रीते॥
सुत वनितादि जान स्वार्थरत, ना कर नेह इन्हीं ते॥
अन्तहु तोहि तजेंगे पामर, तू ना तजे अब ही ते॥
अब नहीं अनुराग जाग जड़ त्यागहुं दुराशा जीते॥
बुझे न काम अग्नि तुलसी कबहूं,
बहु विषय भोग और घीते॥ ३॥

शब्द १२६

तारेंगे तहकीक सतगुरु तारेंगे तहकीक॥ टेक॥
घट हीमें गंगा घट हीमें जमना, घट हीमें जगदीश॥१॥
तुम्हारे ज्ञाना तुम्हारे ध्याना, तुमरी तारन की परतीत॥२
मनकर भौरा बांधले बोरे, छाड़दे विकर्मों की रीति ३
दास गरीब कबीर का चेला, टारे यम की रसीत॥४॥

शब्द १२७

अरी ऐरी उदां लागी का नाम न ले ॥टेक॥
जल से प्रीति करी मछली ने बिछरत प्राण तजे ॥१॥
मृगों को प्रीति लगी नादों से सन्मुख सेल सहे ॥२॥
दीपक से प्रीति लगी है पतंग को बार फेर जिया दे ।
मीरां की प्रीति लगी है सन्तों से गुरु चरणों चित्त दे॥४॥

शब्द १२८

तुम्हारे बिना बिगरी कौन सुधारे ॥टेक ।
जो एक दिन बिगरी पिता पुत्र में बांध खम्भ में मारे ।
जन अपने को काज दयानिधि, रूप नरहरि धारे ॥१॥
जो एक दिन बिगरी भ्रात भ्रात में, लात दुशाशन मारे
राज पाय विभीषण फतह के, बाकत लंक नगारे ॥२॥
जो एक दिन बिगरी राज सभा में, द्रोपति दीन पुकारे
ताको अनन्त चीर बढायो, दुष्ट दुशाशन हारे ॥३॥
एक दिन बिगरी जन नरसी की, समधी जू के द्वारे ।
सब भाँति भात भरो है, कारज जन के सारे ॥ ॥
जब जब भीर परी भक्तन पर, तब तब कारज सारे ।
अब की बार कहांजा सोये बिपत बिदारन हारे ॥५ ॥

शब्द १२९

नाम अपन क्यों छोड़ दिया ॥ टेक ॥

क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत्य बचन क्यों छोड़ दिया

झूठे जग में दिल ललचा कर असल बतन क्यों छोड़ दिया

कौड़ी कौड़ी खूब संभाला, लाल रत्न क्यों छोड़ दिया।

जिहीं सुमरन ते अति सुख पावे सो सुमरन क्यों छोड़ दिया

खालिक इक भगवान भरोसे, तन मन धन क्यों न छोड़ दिया।

शब्द १३०

जन्म तेरो बातां में बीत गयो, तैंने कबहूं न नाम कह्यो

पांच बरस का आलो भोला अबतो बीस भयो।

मकर पचीसी माया कारण, देश विदेश गया ॥१॥

तीस बरस अब मति उपजी, लाभ बढै नित नयो।

माया जोड़ी लाख करोड़, अजहूं न तृप्त भयो ॥२॥

वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, जप तप कठ रह्यो।

साधु की संगत कबहूं न कीनो, वृथा जन्म गयो ॥३॥

यह संसार मतलब का लोभी, झूठा ठाठ रच्यो।

कहत कबीर समझ मन मूरख, तूं क्यों भूल गयो ॥४॥

शब्द १३१

दो० चोरी हिंसा अरु व्यभिचार, काया के त्रय दोष बिचार

निंदा अरु कटुवाद असत्य, वाणी के यह दूषण सत्य ॥
तृष्णा द्वेष बुद्धि अरु क्रोध, त्रिविध दोष मन में तू शोध
इहि प्रकार नव दूषण त्याग, कर सत्संग खुलेंगे भाग ॥

सिया रघुबीर भरोसो ऐसो ।टेक

बारी न बारि सक्यो । प्रहलादहि पावक नांहीं जरोसो ।
गिर ऊपर ते डारि दियो है भूमि पर ठहरो सो ॥ १
हिरणा कुश प्रहलाद भक्त से हठ कर वैर करो सो ।
मारयो चहै दास नर हरि को, आपै दुष्ट मरोसो ॥२॥
जारी लंक अंजनी नन्दन, देखत पुर सगरो सो ।
ताके मध्य विभीषण को गृह, राम कृपा उबरो सो ॥३॥
रावण सभा कठिन प्रण अंगद, हिअधरि हरि सुमरोसो
मेघनाथ सम कोटिन योधा, लागे पग न टरोसा ॥४॥
गज और ग्राह लड़ें भीतर, गज को ग्राह भख्यो सो ।
गरुड़ छोड हरि प्यादे ही आये डूबत गज उधरोसो ॥५
विप्र सुदामा फिरत दुखी होय कबहू न उदर भरो सो
राम कृपा कंचन गृह पाये हय गज बाज खड़ो सो ॥६॥
द्रौपद सुता को चीर दुशासन, राज सभा पकरोसा ।
खैंचत खैंचत भुजबल हारे, नेक न अंग उघरो सो ॥७॥
भारत में भंवरी के अण्डे, छोहनी दल विटरा सो ।
राम नाम जब पक्षि टेरयो, घंटा टूटि परोसो ॥८॥

मीरां के मारन के कारण घोरी ज़हर खरोखो ।
राम कृपाते अमृत ह्वैगयो, हंस २ पान करोखो ॥९॥
तुलसीदास विश्वास रामपद जो नर नारी नरोखो ।
और विभूती कहां लग वरणों जेहि यमराज हरोखो ॥१०

शब्द १३२

दोहा–जिसका कोई न होय हृदय से उसे लगावे ।
प्राणी मात्र के लिये प्रेम की ज्योति जगावे ॥
सब में प्रभु को व्याप्त जान सबको अपनावे ।
है बस ऐसा वही भक्त की पदवी पावे ॥
मुरलिया ने कियो है कठिन तप भारी । टेक
जन्मत ही ऐसी मत गाढ़ी बन में रही एक पग ठाढ़ी ।
वर्षा शीत उष्णता वाढ़ी सो सही तन पर सारी ॥
मुरली निज तप के फल लीने ब्रह्मा रुद्र इन्द्र वश कीने
चेतन थे सो जड़ कर दीने अधरन चढ़ी मुरारी ॥
एक मन्त्र विधि हरि से पावे ताते इतनी सृष्टि उपावे ।
हरि याकूं नित मन्त्र सुनावे अधरज भयो कहारी ॥
हरि ब्रजमें नित बैन बजावे तीनलोक धुनिसुनि सुख पावे
छबीलाल मनावे ब्रज को वास मिले बनवारी ॥

शब्द १३३

सुना है हमने निर्बल के बल राम ॥
जब तक गज बल अपनो कीनो, सरो ना एक हु काम ।
जब गज ने हरि नाम सम्हारो, आगये आधे नाम ॥१॥
दीन होय जब द्रौपदी टेरी बसन रूप धरा श्याम ॥२॥
बहुत ही साख सुनी सन्तन की अड़े संवारे हैं काम ।
नरसी भक्त की हुन्डी पेली दिये रोकड़ी दाम ॥३॥
जप बल तप बल और भुजा बल चौथे बल हैं दाम ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हारे के हरि नाम ॥४॥

शब्द १३४

देखोरी यो कैसो बालक रानी यशुमति जायो है । टेक
सुन्दर बरण कमल दल लोचन देखत चन्द्र लजायो है
पूरण ब्रह्म अखल अवनाशी प्रगट नन्द घर आयो है॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहे केशर तिलक लगायो है ।
कानन कुण्डल गल बिच माला कोटि भानु छबि छायो है॥
शंख चक्र गदा पद्म विराजे चौभुज रूप दर्शायो है ।
खम्भकार प्रकटे नर हरि वपु जन प्रहलाद छुड़ायो है॥
मच्छ कच्छ बराह अरु वामन राम रूप दर्शायो है ।

परशुराम बुद्ध निह्कलंक होय भुवि का भोर मिटायो है
काली मर्दन कंस निकन्दन गोपीनाथ कहायो है ॥
मधु सूदन माधव मुकन्द प्रभु भक्त बछल पद पायो है ।
शिवसनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख गायो है।
सो परब्रह्म प्रकट होय ब्रज में लूट २ दधि खायो है ।
परमानन्द कृष्ण मन मोहन चरण कमल चित्त लायो है

शब्द १३५

दोहा—सब से भली मधुकरी, भांत भांत का नाज ।
दावा काहु का नहीं, बिना बिलायत राज ॥
राजा राना राव रङ्क, बड़ा जो सुमरे नाम ।
कहे कबीर बड़वन बड़ा, जो सुमरे निष्काम ॥

जिस को तू नरतन मानत यह आप रूप भगवान है ।
अहंकार ने जब से घेरा कहन लगा मेरा और तेरा ।
भूल गया निज रूप अनेरा तू सर्वज्ञ सुजान है ॥ १ ॥
मैं हूं देह देह है मेरी केवल यही भूल है तेरी ।
पांच तत्वकी यह तो ढेरी जान क्यों भया अजान है ।२
बुरी भलो करनी जब करे है बन्धन में तभी तो पड़े है।
निष्क्रय को नहीं कुछ डर है तोहे कर्म की आन है ।३
सत चित आनन्द भाव संभारो पांच कोश ते होशान्यारो
नाम रूप कुछ नांहि निहारो यही तो निर्मल ज्ञान है ।४

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये पांच कूप और एक तालाब है। २०० बीघा भूमि में उपयोगी वृक्ष लगाकर उपवन बनाया गया है। आश्रम से लगी हुई ५०० बीघा भूमिगौओं के चरने के लिये श्री० लेफ्टीनेन्ट राव बाहादुर राव बलबीर सिंह जी ने आश्रम को प्रदान की है। इसी भान्ति दादरी, गढ़ीबोलनी, जोड़िया खेंटावास, निखरी, नूरगढ़, खोयरी, पालम, भटिण्डा, आदि अन्य स्थानों में आश्रम को कई सज्जनों ने भूमि प्रदान की है उन में वृक्ष व जलाशय बनाये गये हैं॥

इस आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, कन्या पाठशाला वा अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्संगियों के ठहरने का स्थान पुस्तकालय, प्रेस, गोशाला व औषधालय भी है।

निवेदक

भूमानन्द ब्रह्मचारी

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)

छप गई ! छप गई !! छप गई !!!

विना गुरु के सिद्धान्त कौमुदी

भाषा फक्किका प्रकाश प्रथम खण्ड

इस पुस्तक में सिद्धान्त कौमुदी की गूढ़ फक्किकायें मूलार्थ सहित सरल हिन्दी भाषा में विस्तार पूर्वक भाष्यादि ग्रन्थों से पण्डित प्रभाकर शास्त्री ने कठिन परिश्रम से संग्रह की हैं। यह इतनी सरलता पूर्वक लिखी गई है कि विद्यार्थी गुरु की सहायता के विना लघु कौमुदी पढ़ कर स्वयं सिद्धांत कौमुदी पढ़ सकता है अधिक क्या कोई पदार्थ ऐसा नहीं है जो उन्होंने इस में छोड़ा हो। अतः विद्यार्थी गणों को इस से लाभ उठाना चाहिये। यदि विद्यार्थीगण इस में रुचि दिखा येंगे तो शीघ्र ही हम इस के आगे के संस्करण निकालने का आयोजन करेंगे। १५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥) पचास से अधिक लेने पर २०) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा।

२ शब्द सदाचार संग्रह।

इस में कबीर, सूरदास, गोरखनाथ, मीराँ बाई आदि अनेक महात्माओं की वाणियों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त मनुष्य जीवनोपयोगी उत्तम उपदेशों का भी संग्रह है मूल्य ।=)

३ वेदोपनिषद् ।

इस पुस्तक में प्रथम ईश, कठ, केन, मुण्डक और माण्डूक्य उपनिषद् मूल और अर्थ सहित हैं। इस के पश्चात् चारों वेदों से स्तुति, प्रार्थना, उपदेश आदि के मन्त्रों का संग्रह अर्थ सहित है। १६० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ।)

४ ज्ञान धर्मोपदेश ।

इस छोटी सी पुस्तक में वेद शास्त्र धर्म का सार संग्रहीत है। प्रथम वेद के उत्तम मन्त्र अर्थ सहित हैं फिर वेदान्त, ज्ञान, तथा धर्म के लेख और उत्तम कविताओं का संग्रह है मूल्य ।)॥ इस के अतिरिक्त भक्ति ज्ञानयोग संग्रह शब्द संग्रह डाक व्यय भेजने पर भेजी जा सकती हैं।

नोट:—

जिन सज्जनों का इन पुस्तकों की एक दो प्रतियां मंगवानी हों वह मूल्य और डाक व्यय की टिकट भेज कर मंगा सकते हैं। अन्यथा वी० पी० द्वारा खर्चा अधिक लगेगा।

सूचना ।

आश्रम में प्रेस भी जारी कर दिया गया है। यहां पर बहुत सस्ती, सुन्दर तथा समय पर पुस्तकें छापी जाती हैं।

मैनेजर

भक्ति प्रेस भगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा (रेवाड़ी)

पुस्तक मिलने का पता:--

१. श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा
रेवाड़ी

२. प्रेमसुखदास जी नरसिंहदास जी
चांदनी चौक दिल्ली।

मुद्रक:-भूमानन्द ब्रह्मचारी भक्ति प्रेस भगवद्भक्ति आश्रम
रामपुरा रेवाड़ी।